पंजाब में विराट् विप्लव का प्रथम आयोजन

# कूका–विद्रोह का इतिहास

बी.एस.सिन्धु
(अमर शहीद, भगत सिंह सन्धू)

# अमर शहीद भगत सिंह का हस्तलिखित ऐतिहासिक पत्र

[illegible]

Lahore
27.2.28

श्रीमन्सम्पादक! सादर वन्दे।

आपका 26.2.28 का कृपापत्र तथा फरवरी के फांसी अंक की एक प्रति यथा समय मिल गई थी। इसके लिए हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए।

आपने गुरु राम सिंह जी के तिरंगे चित्र का ब्लाक बनवाया अथवा नहीं, यह मैं नहीं जान सका। उनके 15 चित्र तो आपने प्रकाशित ही नहीं किये। मैं समझता हूं कि चित्र के बिना उन लेखों का बहुत कुछ सौंदर्य उड़ सा जाता है। शेष लेख भी जो कि मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में भेजूंगा सचित्र ही छपने चाहिएं। बहुत से तो ब्लाक बने हुए मिल सकेंगे। उनका डाक व्यय तथा कुछ किराया ही देना होगा। यदि आप उचित समझें, तो लिखियेगा, प्रबन्ध करा दूंगा। आज गुरु रामसिंह जी का एक और चित्र भेज रहा हूं। एक महाशय कह रहे थे कि ब्लाक उनके पास है। यदि आप चाहें तो वे ही ब्लाक भेज दे सकते हैं। कृपया इतना लिखियेगा कि कितने चित्र की आवश्यकता होगी। यह तो '[illegible]' का कुल तमाशा ही निर्भर है।

लेख तो लिखे रक्खे थे, परन्तु यहां पर शहीद सप्ताह के 'शहीदी-दिवस' मनाने का प्रबन्ध किया जा रहा है, इस लिए तब तक लेख न भेज सकूं तो क्षमा कीजियेगा। हो सका तो पहिला लेख एक दो सप्ताह में भेज दूंगा। काम का आगामी अंक किस दिन तक छप जाएगा और लेख अथवा चित्र कितने दिन तक पहुंच जाने चाहिएं, लिखियेगा। आशा है शीघ्र ही उत्तर से अनुग्रहीत कीजियेगा।

भवदीय
Bhagat Singh

## पंजाब मे विराट् विप्लव का प्रथम आयोजन 'कूका विद्रोह' का इतिहास

उपरोक्त लेख के संदर्भ में 'महारथी' पत्रिका को लिखा पत्र जिसमें राष्ट्र पितामह श्री सतगुरू राम सिंह जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता **अमर शहीद भगत सिंह का हस्तलिखित ऐतिहासिक पत्र** -

शहन्शाही कुटिया
सूतर मण्डी
लाहौर

श्रीमान महोदय! सादर वन्दे!

आप का 19.3.28 का कृपा पत्र तथा महारथी के फरवरी अङ्क की एक प्रति यथा समय मिल गई थी। इस के लिए हार्दिक धन्यावाद स्वीकार कीजिए।

आपने गुरू राम सिंह जी के तिरंगे चित्र का ब्लाक बनवाया अथवा नहीं यही मैं नहीं जान सका। कम से कम चित्र तो आपने अभी तक प्रकाशित नहीं किया। मैं समझता हूँ कि चित्र के बिना इन लेखों का बहुत कुछ सौंदर्य कम हो जाता है। शेष लेख भी जो कि मैं शीघ्र ही आप की सेवा में भेजूंगा सचित्र ही छपने चाहिए। बहुत से तो ब्लाक बने हुए मिल सकेंगे। उन का डाक व्यय तथा कुछ किराया ही देना पड़ेगा। यदि आप उचित समझें तो लिखिएगा, प्रबंध करवा दूंगा। आज गुरू राम सिंह जी का एक और चित्र भेज रहा हूं। एक महाशय कह रहे थे कि ब्लाक उनके पास है। यदि आप चाहें तो वे ही छपवा कर भेज दे सकते हैं। कृपया इतना लिखिएगा कि कितने चित्र की आवश्यकता होगी। यह तो 'महारथी' की कुल संख्या पर ही निर्भर है।

लेख तो लिखे रक्खे थे। परन्तु यहां पर राष्ट्रीय सप्ताह में 'शहीदी-दिवस' मनाने का प्रबन्ध किया जा रहा है, इस लिए लेख न भेज सकूं तो कृपया क्षमा कीजिएगा। हो सका तो पहिला लेख एक सप्ताह (में) भेज दूंगा। आप का आगामी अंक किस दिन तक छप जाएगा और लेख अथवा चित्र ठीक किस दिन तक पहुंच जाने चाहिए लिख्एिगा।

उत्तर शीघ्र देकर अनुग्रहीत कीजिएगा।

भवदीय,

# WARRANT OF GURU RAM SINGH

No. 46

To

THE CHIEF COMMISSIONER OF BRITISH BURMAH.

WHEREAS the Governor General in Council, for good and sufficient reasons, has seen fit to determine that Ram Singh

shall be placed under personal restraint in British Burmah, you are hereby required and commanded, in pursuance of that determination, to receive the person abovenamed into your custody, and to deal with him in conformity to the orders of the Governor General in Council, and the provisions of Regulation III. of 1818.

By Order of the Governor General in Council,

9/3/72

*Secy. to the Govt. of India, in the Home Dept.*

FORT WILLIAM;
The 9 March 1872.

# पंजाब में विराट् विप्लव का प्रथम आयोजन
# कूका–विद्रोह का इतिहास

**बी.एस.सिन्धु**
(अमर शहीद, भगत सिंह सन्धू)

सिक्खों में एक उप–सम्प्रदाय है, जो 'नामधारी' या 'कूका' कहलाता है। आज वह एक धार्मिक सम्प्रदाय दीख पड़ता है, परन्तु उस के संस्थापक श्री गुरू राम सिंह एक कट्टर विप्लवी थे। एक प्रसिद्ध ईश्वर भक्त, समाज के दोष देख कर एक विद्रोही–समाज– सुधारक बन गया और एक सच्चे समाज सुधारक की भाँति, जब वह कर्म क्षेत्र में अग्रसर हुआ, तो उस ने देखा कि देश की उन्नति के लिए पराधीनता की बेड़ियों को काटना परमावश्यक है। विदेशी शासन के विरूद्ध विद्रोह की तैयारी का विराट्–आयोजन हुआ। उस की तैयारी में ही जो कुछ झगड़ा फिसाद हो गया था, उसी से शासकों को समस्त आन्दोलन के कुचल डालने का सुअवसर मिल गया।

कूका आन्दोलन का इतिहास, आज तक लोगों के सामने नहीं आया। किसी ने उन्हें महत्त्वपूर्ण नहीं समझा। कूकों को Fanatics तथा मूर्ख कह कर हम लोग अपने कर्तव्य से छुट्टी पा जाते हैं। स्वार्थ के लिए अथवा लोभ के लिए यदि उन लोगों ने प्राण दिए होते, तो हम उपेक्षा दिखा सकते थे परन्तु उन की तो 'मूर्खता' में भी 'देश–प्रेम' का भाव कूट–कूट कर भरा था। वे तो तोप के मुँह के सामने आते समय हँस देते थे, वे तो सानन्द 'सत्य श्री अकाल' के तुमुल–निनाद से आकाश पाताल को आच्छादित कर देते थे। उन के मस्तक पर व्यथा, चिन्ता अथवा पाश्चाताप की रेखा भी नहीं दीख पड़ती थी। क्या वे भूल जाने योग्य हैं ? उन का गुरुतर अपराध शायद विफलता के अतिरिक्त

कुछ भी नहीं। परन्तु स्कॉच वीर विलियम वालीस भी तो विफल हो मृत्यु दण्ड का भागी बना था। उस की तो आज समस्त इंग्लैण्ड पूजा करता है। फिर हमारे असफल देशभक्त ही इस तरह क्यों भुला कर निबिड़ अन्धकार में फेंक दिये जायँ ? अस्तु।

हम समझते हैं कि हमारे लिये, देश के लिये निष्काम भाव से मरने वाले लोगों को भुला देना बड़ी भारी कृतघन्ता होगी। हम उन की स्मृति में कोई बड़ा स्तूप नहीं खड़ा कर सकते, तो क्या अपने हृदय में भी थोड़ा स्थान देने से झेपें ? इसी विचार से प्रेरित हो कर आज उन 'मूर्ख' तथा 'उतावले' आशावादियों का संक्षिप्त इतिहास लिखने की यह चेष्टा है, इस से यदि लोगों को उनके सम्बन्ध में ठीक–ठीक बातों का ज्ञान हो जाये, और अधिक जानने की इच्छा उत्पन्न हो जाये तो यह प्रयास सफल समझूँगा।

उन के इस छोटे से इतिहास को हम तीन भागों में बांट सकते हैं।

(1) गुरू जी का व्यक्तिगत चरित्र,
(2) कूका विद्रोह,
(3) विद्रोह के बाद।

**गुरू राम सिंह जी का जीवनः–**

श्री राम सिंह जी का जन्म सन् 1824 ई. में भैणी नामक गांव जिला लुधियाना (पंजाब) में एक बढ़ई के घर हुआ था। कहते हैं, गुरू गोबिन्द सिंह जी ने कभी कहा था कि 'मैं बारहवें वेष में राम सिंह नाम से प्रसिद्ध अथवा प्रकट हो होऊंगा।' इस लिए उनके अनुयायी उन्हें उन्हीं दस गुरुओं का अवतार मानते हैं।

गुरू राम सिंह युवावस्था में पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह की सेना में भर्ती हो गए। वे पहिले से ही

ईश्वर–भक्त थे और अधिक समय ईश्वरोपासना में ही बिताते थे। इसी कारण वे शीघ्र ही सेना में सर्वप्रिय हो गए। वे बहुधा ईश्वर भक्ति में लीन रहने के कारण सैनिक कर्त्तव्यों की पूर्ति में असमर्थ रहते। परन्तु उन्हें सब कर्तव्यों से छुट्टी दे देने पर भी सेना में ही रखा गया। इक दिन–कहा जाता है– उन्हें स्वप्न में श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के दर्शन हुए, जिन्होंने उनसे हज़रों (सीमान्त) निवासी बाबा (गुरू) बालक सिंह से गुरू गद्दी का अधिकार लेने को कहा। दूसरे ही दिन उन्होंने अन्य बीस पच्चीस भक्तगण के साथ उधर प्रस्थान कर दिया। बाबा बालक सिंह जी ने इनका खूब स्वागत किया और दीक्षा दी। यहां से लौट कर आप ने नौकरी छोड़ दी और अपने गाँव में जाकर शान्त जीवन बिताने लगे।

वर्षों बीत गए। अनेक परिवर्तन हो गए। महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद गद्दी के लिए झगड़ा हुआ। अंग्रेजों ने पंजाब जीत लिया और इसे भी शेष भारत की तरह पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ दिया। यह सब कुछ हो गया और साथ ही 1857 का सिपाही विद्रोह भी हो गया, और अंग्रेज शान्ति पूर्वक भारत पर शासन करने लगे, परन्तु गुरु राम सिंह वहीं अपना शान्त जीवन बिताते रहे। हाँ, ईश्वर भक्ति के कारण आप दूर–दूर तक प्रसिद्ध हो गये। प्रान्त भर से लोग दर्शनों के लिए आते थे।

पहिले तो आप केवल ईश्वर भक्ति का ही उपदेश देते थे, परन्तु बाद में कुछ समाज सुधार सम्बन्धी उपदेश देने लगे। आपने कन्या–क्रय–विक्रय, मदिरा, मांस–भक्षण आदि बहुत सी कुरीतियों का बड़े ज़ोर से विरोध किया। आप के भक्त गण भी सादा जीवन बिताते और ईश्वरोपासना में तल्लीन रहते। आप ने अपने गांव में एक सार्वजनिक भण्डारा (लंगर) खोल रक्खा था, जहाँ पर कि सभी लोगों को बिना मूल्य भोजन मिलता था। परन्तु शीघ्र ही एक

परिवर्तन हुआ।

कहा जाता है, किसी अज्ञात सन्यासी रामदास नामक ने आकर उन से कहा – 'इस समय देश को विदेशी शासन से छुटकारा दिलाना ही सर्व प्रथम कर्तव्य है।' उसी समय से आपने अपना कार्यक्रम राजनैतिक बना लिया। सन्यासी वाली बात केवल सुनी सुनाई है, सम्भव है, ऐसी कोई घटना घटित ही न हुई हो। परन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि इस समय गुरु राम सिंह जी को देश की पराधीनता एक दम बुरी तरह अखरी। वे समझ गए थे कि बाह्य स्वतंत्रता के साथ ही साथ देश वासियों की आत्मा भी मरती जा रही है। लोग स्वाधीनता का विचार तक खो बैठे हैं। अभी कल उन्होंने सिपाही विद्रोह तथा उस की विफलता तक खो बैठे हैं। अभी कल उन्होंने सिपाही विद्रोह तथा उस की विफलता के बाद किए गए अकथनीय अत्याचार देखे सुने थे। उस से भी अवश्यमेव उन्हें कुछ ठेस लगी होगी। जो भी हो, उन्होंने विदेशी शासन का खोखलापन खूब अच्छी तरह देखकर एक कार्यक्रम बना कर, कार्य आरम्भ कर दिया। अब तक केवल उपदेश ही होता था, अब 'दीक्षा' तथा संगठन भी आरम्भ हुआ।

उन्होंने उस समय ठीक उसी असहयोग का प्रचार कर दिया, जो 1920 में महात्मा गाँधी जी ने किया। उनका असहयोग महात्मा जी के असहयोग से भी कई बातों में बढ़ चढ़ कर था। अदालतों के बहिष्कार, अपनी पंचायतों के संस्थापन, सरकारी शिक्षा के बहिष्कार, विदेशी सरकार के पूर्ण बहिष्कार के साथ ही साथ, रेल, तार तथा डाक के बहिष्कार का प्रचार भी हुआ। उस समय देश आज की तरह निर्जीव होकर इन वस्तुओं पर इतना निर्भर नहीं हो गया था, कि इनके बहिष्कार की कल्पना भी न कर पाता। प्रत्युत उन्होनें डाक का अपना प्रबन्ध इतना अच्छा कर लिया था कि 'उनकी डाक सरकारी डाक से भी जल्दी पहुँच

जाती थी।'' इस सब के साथ सादा वेष तथा स्वदेशी वस्त्र पहनने का ज़ोर से उपदेश होता था। प्रचार कार्य बहुत दिनों तक न होने पाया था, कि सरकार की तीव्र दृष्टि इस आन्दोलन पर पड़ी। उन्हें इस प्रचण्ड आन्दोलन को दबा देने की चिन्ता हुई।

T.D. Forsynth, जो कि सन् 1863 ई. में पंजाब सरकार के चीफ़ सैकटरी थे और बाद में 1872 में कूका–विद्रोह के समय अम्बाला डीवीज़न के कमिश्नर पद पर काम करते थे, अपनी Autobiography में लिखते हैं–

''1863 में ही मैं इस आन्दोलन की तह तक पहुंच गया था, और समझ गया था कि यही क्या भीषण परिणाम ला सकता है। अतः मैंने उनके प्रचार पर बहुत से बन्धन लगा दिये जिससे उनके प्रचार कार्य की गति कुछ हद तक रुक गई।''

जब सरकार ने लोगों का बड़ी संख्या में भैणी आना जाना, तथा उनका वहाँ अधिक देर तक ठहरना तक भी बन्द कर दिया, तब गुरु राम सिंह जी ने अपना कार्य जारी रखने के लिये एक तदबीर सोची। समस्त देश को 22 हिस्सों में विभक्त कर 22 योग्य मनुष्य उन का संगठन करने के लिये नियुक्त कर दिये थे। वे सभी 'सूबे' कहलाते थे। कार्य बहुत कुशलता से चलता रहा। सभी नामधारी सिक्ख अपनी आय का दशांश गुरु जी की भेंट किया करते थे। वह सब भैणी भेज दिया जाता था। यह सब होता ही था, और साथ ही साथ गुप्त रूप से विद्रोह का प्रचार भी होता रहा। बाहिरी जोश बहुत कम कर दिया गया। यहाँ तक कि सरकार का सन्देह बहुत हद तक दूर हो गया और सब बन्धन स्वतः 1863 में हटा लिये गए।

बन्धन मुक्त होते ही लोगों का जोश बढ़ा। इतना बढ़ा कि सम्भलना कठिन हो गया। इसी से 1872 में अपरिपक्व विद्रोह उठ खड़ा हुआ, जिसके कारण सारा विराट् आन्दोलन पिस गया। परन्तु

इस मुख्य घटना पर कुछ लिखने से पहिले श्री गुरु जी के व्यक्तिगत चरित्र सम्बन्धी कुछ मनोरंजक बातों का उल्लेख करना अनुचित न होगा।

**गुरू राम सिंह बड़े तेजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके असाधारण आत्मिकबल सम्बन्धी बहुत सी बातें प्रसिद्ध हैं। कहते हैं, कि वे जिसके कान में दीक्षा का मन्त्र फूँक देते थे, वही उनका परम भक्त तथा शिश्य हो जाता था।** जब यह बात ज़रा प्रसिद्ध हुई तो दो बदमाश रंगरेज़ उनके पास उनकी शक्ति की परीक्षा लेने गए। उन्होंने कहा था–'देखेंगे, गुरु जी का हम पर क्या प्रभाव पड़ता है ? परन्तु दीक्षा के बाद से वे उनके कट्टर भक्त बन गये (भाई परमानन्द के एक लेख के आधार पर) और तब से उनके व्यक्तिगत दोष भी मिट गये। इसी तरह डाक्टर गोकल चन्द जी पी.एच.डी. एक लेख में लिखते हैं कि उनकी दादी का भाई एक बड़ा चरित्रहीन व्यक्ति था, और उसे हुक्के का व्यसन था। केवल एक बार ही गुरु राम सिंह जी के दर्शनों ने उनका जीवन एकदम परिवर्तित कर दिया। उनका हुक्का तो एक दम छूट गया, और शेष समस्त जीवन ईश्वरोपासना में ही बीता। इसी तरह एक और मनुष्य जिसने कि कभी कोई हत्या कर दी थी वह भी गुरु जी से दीक्षित हुआ। फिर उसने अपने आपको कोर्ट में पेश कर दिया और अपना अपराध स्वीकार कर लिया। जब जज ने अत्यन्त आश्चर्य के साथ पूछा – "तुम्हें तो कोई जानता भी न था और हत्या सम्बन्ध बात का तुम पर सन्देह भी न था, फिर तुमने एकाएक अपराध स्वीकार कर मृत्यु का आह्वान क्यों किया?" तो उसने कहा – "मेरे गुरु जी की ऐसी ही आज्ञा है।"

सरकार ने भी परीक्षा करनी चाही। एक सब–इन्सपैक्टर को भेजा। वह भी प्रसन्न था। उसे आशा थी, कि सब भेद खोल कर कुछ पुरस्कार पाएगा। गुरू जी के दर्शन किये, लौट आया।

लौटते ही त्यागपत्र दे दिया। अफसरों ने पूछा, ''राम सिंह क्या कहता है?'' कहा, ''बताने की आज्ञा नहीं।'' पूछा गया – ''त्यागपत्र क्यों देते हो?'' उत्तर दिया, ''गुरू जी की यही आज्ञा है। वे कहते हैं विदेशी शासकों की नौकरी मत करो।''

ऐसी अनेक घटनाएं हैं। जो भी हो, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि गुरू जी, ईश्वर–भक्ति तथा उच्च–चरित्र के कारण एक महान् शक्तिशाली महापुरूष थे। अतः उपरोक्त घटनाएं असम्भव नहीं। अस्तु! सरकार यह बात देख कर घबराई और उसे इस सब आन्दोलन को दबाने की चिन्ता हुई, यह भी स्वाभाविक ही था।

## अपरिपक्त विप्लव का प्रारम्भ

1868 में सब बन्धन हटा दिये गये। लोग सहस्त्रों की संख्या में भैणी आने लगे। सन् 1871 ई. में कुछ कूके वीर अमृतसर में से गुज़र रहे थे। सुना, मुसलमान बूचड़ असंख्य गौओं की नित्य हिन्दुओं को चिढ़ाने के लिए उनके सामने हत्या करते हैं। हिन्दू–समाज को बहुत कष्ट होता है। कट्टर गौ भक्त कूके यह सब सहन न कर सके। इन्होंने बूचड़खाने पर आक्रमण कर दिया और सभी बूचड़ों (कसाईयों) को वहीं ढेर कर दिया और आप भैणी की ओर चल दिये। अमृतसर के सभी प्रतिष्ठित हिन्दू गिरफ्तार कर लिये गये। उधर गुरू जी को वैसे भी सारा समाचार मिल चुका था, इधर इन कूकों ने जाते ही सब कहानी कह सुनाई। गुरू जी ने आज्ञा दी, ''जाओ जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लो और उन निर्दोष लोगों को विपत्ति से बचाओ।'' आज्ञा का पालन हुआ। निरापराध लोग छूट गए। ऐसी ही एक घटना रायकोट में भी हो गई। वहां पर भी कई कूकों को फाँसी पर लटका दिया गया था। परन्तु वहाँ पर शेष सिक्खों ने अनुभव किया, कि उनके निर्दोष साथी फांसी पर लटकाए गए हैं।

प्रतिहिंसा की अग्नि प्रचण्ड हो उठी, परन्तु कोई विशेष घटना नहीं हुई।

13 जनवरी 1872 को भैणी में माघी का मेला होने वाला था। लोग दूर दूर से हजारों की संख्या में आने लगे। एक कूका नामधारी वीर मालेरकोटला नामक मुसलमान रियासत की इसी नाम की राजधानी में से गुजर रहा था। वहाँ पर उसने एक मुसलमान को देखा, जो एक बैल पर अत्यन्त बोझ लादे, स्वयं उस पर बैठा हुआ उसे पीटता जा रहा था। बैल बड़े कष्ट से चल रहा था। यह देख कर उस कूके ने उस मुसलमान से कहा, 'भाई! इतना अत्याचार न करो। बोझ पहले ही ज्यादा है, तुम नीचे उतर जाओ तो क्या हर्ज हो।' परन्तु उस मुसलमान ने तुरन्त उसे दो–चार गालियां दे दीं। कूका सिक्ख कोई भीरु या कायर तो था ही नहीं। ईंट का जवाब पत्थर से मिला। नौबत, हाथा–पाई तक आ गई। मुसलामन रियासत के मद–मत्त मुसलमान कर्मचारी उसे पकड़कर कोतवाली में ले गये, जहां पर उस गरीब को अनेकानेक यातनाएं तथा अपमान सहन करना पड़ा। और बाद में वह बैल उसके पास बैठा कर उस की आँखों के सामने वध कर दिया गया। यह असह्य था। छूटते ही वह वीर, भैणी पहुंचा। उस ने भरे दीवान में क्रूर आततायियों के उन अत्याचारों का विवरण, तथा अपनी करूण–कथा कह सुनाई। लोग तो रायकोट की घटना से पहिले ही उत्तेजित हो रहे थे। उस पर यह घटना हो गई। जलती पर तेल पड़ा और भभक उठी। निज बाहू–बल के भरोसे बदला चुकाने का निश्चय हो गया।

उस समय सरकार जानबूझ कर चुप रही। चुप चाप उन को अंग्रेजी राज्य में से रियासत में घुसने दिया। उसी समय उन सब को गिरफ्तार क्यों नही कर लिया गया? कुछ दिनों के बाद

उन का जोश ठण्डा हो ही जाता। परन्तु नहीं, सरकार तो स्वयं चाहती थी कि उसे कोई अवसर मिले, जिस से वह आन्दोलन कुचला जा सके। इस समय मनोवांच्छित सुअवसर मिल गया। हम सरकार पर जान बूझ कर चुप रहने का अपराध लगा सकते हैं। अस्तु, वे 150 कूके वीर पटियाला के सीमान्त स्थित रब्बों गांव के बाहर जा ठहरे। रात भर वहीं विश्राम किया। अगले दिन भी वे वहीं रहे, शायद, और साथियों की प्रतीक्षा कर रहे थे।

14 जनवरी सन् 1872 ई. को सांय काल उन्होंने कुछ सिक्ख सरदारों के मलौद (Maloth) नामक किले पर आक्रमण कर दिया। इस किले पर आक्रमण क्यों किया गया? इसके सम्बन्ध में डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर में लिखा है, कि उन्हें आशा थी कि यह सरदार विद्रोह में उन का नेतृत्व लेंगे। सम्भव है, पहले विराट् आयोजन में ऐसी ही तैयारी रही हो और इस समय उन्होंने अपरिपक्व विद्रोह उठता देख सहायता देने अथवा नेतृत्व लेने से इन्कार कर दिया हो। खैर, कूकों ने वहां अक्रमण कर दिया और कुछ शस्त्र, कुछ घोड़े तथा एक तोप लेकर चलते बने। वहां पर दोनों ओर के दो–दो व्यक्ति मरे और कुछ घायल हुए।

अगले दिन प्रातःकाल 7 बजे वे मालेरकोटला पहुंच गए। सरकार ने पटियाला तथा मालेरकोटला दोनों राज्यों को पहले से सतर्क कर दिया था। मालेरकोटला की रक्षा के लिए विशेष तौर से तैयारी की गई थी। परन्तु इन दुःसाहसी वीरों ने इस वेग से आक्रमण किया कि शहर में तो क्या, महल तक में जा घुसे। खज़ाना लूटने की कोशिश होने लगी। लूट ही तो लिया होता, परन्तु दुर्भाग्यवश भूल से एक और दरवाज़ा तोड़ने में बहुत समय नष्ट हो गया, जहाँ कि कुछ व्यर्थ के कागजों के अतिरिक्त उनके हाथ कुछ न लगा। और उधर उन्हें शीघ्र ही वहाँ से भागना पड़ा। 8 को मारकर, 15 को घायल कर और कुछ शस्त्र तथा घोड़े

लेकर वे वहाँ से चल निकले। उनके 7 साथी मरे और पाँच पकड़े गए अथवा घायल हो गए। उनके पीछे कोटला के सशस्त्र सैनिक भी भागे और–

"A sort of running fight was kept along, shots fired and many more kookas were wounded, till both parties reached the village of Rurr in the Patiala State: the Kookas carrying most of the wounded with them".

रूर गाँव के निकटवर्ती जंगल में वे छिप गए। शोरपुर के नायब नाज़िम ने उन पर फिर आक्रमण किया। फिर लड़ाई छिड़ी, परन्तु कूके थके मांदे थे, भूखे प्यासे थे और थे घायल बिना मरहम पट्टी के। वे पकड़े गये। 68 व्यक्ति पकड़े गए थे, जिनमें से 29 घायल हो चुके थे।

यही घटना 'विद्रोह' कहलाती है। मि. कावन अपने एक पत्र में लिखते हैं:–

"It looks like thee commncment of an insurrection.....".

और एक स्थान पर लिखते हैं:–

".......I propose to execute at once all who were engaged in attacks on Malodh and Malerkotla. I am sensible of great responsibility in exercising an authority which is not vested in me, but the ease is an exceptional one. These men are not ordinary criminals. They are rebels, having for their immediate object the acquisition of plunder and ulteriorly the subversion of order. It is certain that had their first attempts been crowned with success, had they succeeded in arming themselves and providing themselves with horses and treasure, they would have been joined by all the abandoned characters in the

country, and their extinction would not be effected without much trouble."

ये 68 व्यक्ति 17 जनवरी को मालेर कोटला लाये गए। उन में से दो स्त्रियाँ भी थीं। वे पटियाला स्टेट की नागरिका थीं। उन्हें तो स्टेट के सुपुर्द कर दिया गया और शेष 66 में से पचास को वहीं तोप से उड़ा देने का निश्चय हो चुका था। अपनी अपनी बारी में सानन्द सत्य श्री अकाल आदि जय घोष करते हुए, तोप के मुँह के सामने खड़े हो जाते। एक बार धमाके का शब्द होता और वह कूका वीर इस संसार से न जाने किधर चला जाता। उन fanatics को मृत्यु का भय नहीं हुआ, वे हम 'समझदार' लोगों की तरह मृत्यु की कल्पना मात्र से ही थर–थर काँप नहीं उठे। ऐसे ही मूर्ख और कहाँ कितनी संख्या में मिल सकते हैं? उस समय स्वार्थ के लिए मरने वाले लोग इसी तरह प्रसन्न रह सकते, इसी तरह हँसते हुए मृत्यु से आलिंगन कर पाते, यह असम्भव जान पड़ता है। आत्म–सम्मान, देश–हित तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति आदि न जाने किन–किन उच्च–भावों की प्रेरणा से वह मृत्युज्जंय बन पाए थे। इसी से हम उन की इस उत्तेजना, तथा जल्दबाज़ी को भूल कर प्रणम्य समझने में बाधित होते हैं। खैर! एक एक करके 49 तो तोप से उड़ा दिये गये। परन्तु पच्चासवें ने जो कि तेरह वर्षीय बालक था वहां फिसाद खड़ा कर दिया। मि. कावन एक पत्र में लिखते हैंः–

"it was my intention to have 50 men blown away and to have sent the remaining 16 rebels to Malodh to be executed there tomorrow, but one excaped from the guards and made a furious attack on me, seizing me by the beard and endeavouring to strangle me; and as he was a very powerful man, I had considerable difficulty in

releasing myself... Those officers (whom he attacked) drew their swords and cut him down."

इसी घटना के सम्बन्ध में जो बात सुनी जाती है, वह यूँ है कि 50वां व्यक्ति एक तेरह वर्षीय बालक था। उसे देख कर मिसेज कावन को दया आई उसने अपने पति से उसे छोड़ देने को कहा। पत्नी की प्रेरणा से मि. कावन ने झुक कर उस बालक से कहा, ''अरे पाजी राम सिंह का साथ छोड़ दो और कह दो मैं उसका अनुयायी नहीं हूँ, तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।'' वीर बालक अपने गुरू के प्रति यह अपमान–जनक शब्द सहन न कर सका। क्रुद्ध सिंह की तरह वह झपटा और उसने मि. कावन को दाढ़ी से पकड़ लिया और न छोड़ा जब तब कि उसके दोनों हाथ न काट दिये गये और तलवारों से उसे कत्ल न कर दिया गया। अस्तु! इस तरह उस दुःखान्त नाटक का एक और पर्व समाप्त हो गया।

बिना अभिभोग चलाये 50 को तोप से उड़ा देना (Summary Execution) कर देना एक दम अनुचित दीख पड़ता है। उधर मि. फार्सिथ, अम्बाला कमिश्नर, ने उन्हें एक पत्र में लिख दिया था कि बिना अभियोग चलाये किसी को मृत्यु दण्ड मत देना। परन्तु मि. कावन ने मनमानी कर डाली और जब मि. कावन पर बाद में मुकद्दमा चला, तो उन्होंने कमिश्नर साहब का अगले दिन का पत्र– जिसमें उन के इस कार्य की प्रशंसा की गई थी – पेश किया। परन्तु उसके सम्बन्ध में मि. फार्सिथ का कहना है कि मैंनें परिस्थिति नाजुक जान यह उचित समझा कि लोगों के किंच्चितमात्र भी सन्देह न होने पाये कि अफसरों में भी आपस में कुछ खींचातानी हो रही है। अतः उसने पिछले कार्य की प्रशंसा कर और Summary Execution करने से मना कर दिया था। परन्तु शेष 16 व्यक्तियों को भी तो अगले ही दिन तोपों से उड़ा दिया गया।

उन वीरों की मृत्यु के प्रति उपेक्षा ने अफसरों को भी प्रभावित कर दिया था। Mr. E. Perkinson, Deputy Superintendent Police अपनी 17 जनवरी की रिपोर्ट में दो व्यक्तियों के सम्बन्ध में लिखते हैं:–

"......Both Hira Singh and Lehna Singh the leaders taken. They are generally well-dressed and well to do men; but have the appearance of bold and determined looking fellows."

इधर तो यह सब कुछ हो रहा था, उधर डिप्टी कमिश्नर ने गुरू राम सिंह को बुलाया और घर लौटा दिया। क्योंकि वह समझता था कि वे निर्दोष हैं। क्योंकि उन्होंने उन उन्मत्त तथा उत्तेजित कूकों की खबर दे कर पुलिस को चौकन्ना कर दिया था। गुरू राम सिंह की निर्दोषता के सम्बन्ध में पंजाब सरकार ने भारत सरकार को यूं लिखा:–

"No direct evidence against Ram Singh in this case sufficient to put him on his trail."

परन्तु 17 जनवरी को कमिश्नर की आज्ञा से बहुत सी घुड़सवार तथा दूसरी पुलिस ने कर्नल बायली (Baillie) की अध्यक्षता में भैणी–नगर को एकाएक घेर लिया। सब लोगों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। परन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि सरकार उन्हें पकड़ना चाहती है, तब उन्होंने अपने आपको शान्तिपूर्वक पुलिस के हवाले कर दिया। उस समय गुरू राम सिंह के साथ चार व्यक्ति, चार विभिन्न स्थानों के सूबे, श्री साहिब सिंह, श्री जवाहर सिंह, श्री गुरुदित्त सिंह तथा श्री नानू सिंह भी थे उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। इन्हें पहले तो इलाहाबाद भेजा गया और बाद में रंगून भेज दिया गया। यह गिरफ्तारी रेग्यूलेशन 1818 के अनुसार हुई थी। यहीं पर गुरू राम सिंह जी

की वह चाल उलटी पड़ी। यदि उस समय वे बचे रहते तो फिर शीघ्र ही सब स्थिति सम्भल जाती।

इधर ज्यों ज्यों प्रान्त भर में विद्रोह का समाचार फैलने लगा, त्यों त्यों ये लोग भैणी की ओर जाने लगे। सब लोगों का विचार था कि जिस दिन की प्रतीक्षा थी वह आ गया। इधर पुलिस भी चौकन्नी हो गई थी। जहां कोई कूके मिल जाते, वहीं पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता। इसी तरह 172 कूकों के एक गुट से कर्नल बायली की भेंट हो गई। उन में से चार तो विभिन्न स्थानों के सूबे, श्री ब्रह्मा सिंह, श्री काहन सिंह, श्री पहाड़ा सिंह तथा श्री हुकुम सिंह तो तुरन्त पहले लुधियाना और फिर गुरू जी के पास इलाहाबाद भेज दिए गए और 120 घरों को लौटा दिये गये और शेष पच्चासः "…. having no homes and ostensible means of living, being in fact, a dangerous class of this sect, who having sold all they possessed, hold themselves in readiness to perform any act that their leaders may order–"

को जेल में बन्द कर दिया गया। इस तरह कुछ ही दिनों में सब मामला शान्त हो गया।

**उसके बाद–**

सब कुछ हो चुका। नाटक की मुख्य घटना हो चुकी। अब तो कथा समाप्त करने को परिशिष्ट मात्र शेष है। मि. कावन और मि. फार्सिंथ पर Summary Execution करने का अभियोग चला। उन्होंने पंजाब की भीषण स्थिति का रोमांचकारी चित्र चित्रण करने में कोई कसर उठा न रखी। और पुरस्कार पाने की आशा प्रकट की। मि. कावन को तो पदच्युत कर इंग्लैंड भेज दिया गया और मि. फार्सिंथ को पंजाब से अवध उसी पद पर तबदील कर दिया।

पच्चास को तोपों से उड़ाने और 16 को अगले दिन तोपों से उड़ाने और वह भी बिना अभियोग चलाए, बिना उन लोगों को सफाई देने का अवसर दिये– के अपराध की यह सज़ा दी गई। Sir Henry Cotton के शब्दों में तो यह दण्ड एक दम अपर्याप्त अथवा नाकाफी (inaccurate) था, परन्तु ऐंग्लो–इण्डियन समाचार पत्रों ने इतना भी दण्ड देने के विरूद्ध बहुत बावेला मचाया था।

इधर शेष कूका समाज पर बहुत अत्याचार होने लगे। गुरू राम सिंह के बाद श्री हरी सिंह गुरू बने। उन्हें भैणी में नज़रबन्द कर दिया गया। गुरुद्वारे के बाहर पुलिस की चौकी बिठा दी गई। छः वर्ष तक तो भैणी की ऐसी दशा रही मानो, शत्रु घेरा डाले पड़ा हो। न कोई बाहर से भीतर जा सकता, न कोई भीतर से बाहर जा पाता। फिर धीरे धीरे कुछ कुछ लोगों का आना जाना खुला। उस समय भी (गुरु) हरी सिंह बाहर नहीं जा सकते थे। उसके बावजूद–कि आने जाने की आज्ञा हो गई थी, आने वाले यात्रियों को बहुत तंग किया जाता था। बुरी तरह अपमानित किया जाता, मुश्कें कस कर धूप में डाल दिया जाता, जहाँ बेचारों को घण्टों झुलसना पड़ता। चारपाई के नीचे हाथ दबाकर कई आदमी चारपाई पर बैठ जाते। उन पर हुक्के का गन्दा बदबूदार पानी डाल दिया जाता। यह सब अत्याचार करने वाले इसी देश के निवासी होते थे। और इन यातनाओं को चुपचाप सहन करने वाले भी इसी देश के अभागे निवासी। पंजाब प्रान्त का इतिहास बड़ा रोमाचंकारी है। समाज का समाज Outlaw घोषित हुआ तो पंजाब में, किसी सम्प्रदाय के सभी के सभी लोग भीषण अत्याचारों का शिकार हुए तो पंजाब में और फिर हज़ारों का सारे का सारा आन्दोलन Unlawful करार दिया गया तो पंजाब में इस बार भी ऐसा ही हुआ। प्रत्येक कूका अपने अपने घर में नज़रबन्द था। बिना पुलिस की आज्ञा के कहीं बाहर न जा सकता। आज्ञा लेने

जाने के माने होते, पुलिस के अकथनीय अत्याचार तथा अपमान सहन करना और दिनों तक भूखे प्यासे तड़पते रहकर बिना बाहर जाने की आज्ञा पाये चुपचाप घर आकर बैठ जाना। यह दशा बहुत दिनों तक चली, और बन्दिशें तो अब 1920 असहयोग के दिनों में हटाई गई। अस्तु!

गुरू राम सिंह जी बर्मा में ही नज़रबन्द रहे। डि. गज़ेटियर में लिखा है– 'Finally he died in Burma in 1885, परन्तु 1920 में डस्का निवासी श्री आलमसिंह इंजीनियर ने एक लेख द्वारा उपरोक्त बात का खण्डन किया था। उन्होंने लिखा था कि वे दो और साथियों सहित Lower Burma की किसी पोर्ट से लास्टद्वीप जा रहे थे। उस पोर्ट का नाम मोलमीन था। वहां पर एक दिन एक बड़े तेजस्वी व्यक्ति को पुलिस की निगरानी में सैर करते देख कर उनके सम्बन्ध में कुछ पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि ये पंजाब के राजा हैं। वह समझे, शायद महाराजा दिलीपसिंह हों, परन्तु बाद को मालूम हुआ वह कूका–गुरू राम सिंह जी हैं। उस समय उन के साथ उनका एक सूबा लक्खा सिंह भी था। उन से मिलने पर खूब बातचीत हुई और मालूम हुआ कि उन्हें पांच मील तक बाहर सैर करने की आज्ञा थी। खैर! सरकार ने इस लेख का कभी प्रतिवाद भी नहीं किया। कूका लोगों का विश्वास है कि वे अभी जीवित हैं। खैर!

आज भी पंजाब में कूका सम्प्रदाय विद्यमान् है। उन में ईश्वर–भक्ति का अभी तक प्राधान्य है। बहुत सवेरे उठ कर केशी स्नान कर घण्टों तक भगवत्भजन में लीन रहना, उनका नित्य नियम है। मांस, मदिरा, आदि वस्तुओं के प्रयोग के कट्टर विरोधी हैं। एक सीधी पगड़ी एक लम्बा कुर्त्ता और एक कच्छा यही उनका पहिनावा है। एक कम्बल और एक डोलका सा बना हुआ बड़ा सा लोटा (गड़वा) और एक टकुआ जिसे वे सफाजंग बोलते

हैं–यही उनका सामान है। गले में सूत की बनी हुई एक सुन्दर माला रहती है। उनमें भीं एक विशेष मस्ताना दल होता है। वे शब्दकीर्तन करते हुए एक दम सुध बुध भूल जाते हैं। इन लोगों के संकीर्तन से प्रत्येक व्यक्ति प्रफुल्लित तथा रोमांचित सा हो जाता है। खून खोलने लगता है, आँखों में प्रेम तथा भक्ति के आँसू भर आते हैं।

ग्यारहवें और बारहवें गुरू में विश्वास रखने के कारण तथा माँस मदिरा के कट्टर विरोधी होने के कारण वे शेष सिक्ख समाज से जुदा हैं। उन में समानता का भाव प्रबल होता है। होली आदि के अवसर पर उन के विशेष उत्सव होते हैं, उन्हें देख कर उस अधखिले फूल की याद आती है, जो खिलते ही मसल डाला गया हो। गुरु राम सिंह जी की हसरतें दिल की दिल ही में रह गई थी। उनके शेष सभी अनुयायियों का आत्म–बलिदान भी विस्मृत हो गया, उन अज्ञात लोगों के बलिदानों का क्या परिणाम हुआ सो वही सर्वज्ञ भगवान जानें। परन्तु हम तो उनकी सफलता–विफलता का विचार छोड़, उनके निष्काम बलिदान की याद में एक बार नमस्कार करते हैं।

# स्वाधीनता संग्राम के अग्रदूत सत्गुरू राम सिंह जी

– डॉ. रेणु द्विवेदी
(संस्कृत विश्वविद्यालय में स्थापित
श्री सत्गुरु राम सिंह पीठ की प्रमुख)

विश्व पटल पर स्वाधीन भारत आज विश्व गुरू के रूप में तेजी से उभर रहा है। परन्तु हम जिस स्वाधीन भारत में सांस ले रहे हैं, उस स्वाधीनता को प्राप्त करने में हमें कितनी बड़ी–बड़ी कुर्बानियाँ देनी पड़ी हैं। सत्गुरु राम सिंह जी जिन्होंने अपनी अद्भुत संगठन शक्ति तथा कुशल नेतृत्व के द्वारा केवल स्वाधीनता संग्राम की लौ प्रज्जवलित ही नहीं कि अपितु पराधीन, शोषित, कुमार्गगामी तथा नैतिक दृष्टि से पतित लोगों में स्वाधीनता, स्वाभिमान, स्वराष्ट्र प्रेम तथा सौहार्द की भावना के साथ जीने की ललक भी जगाई। सत्गुरु राम सिंह जन्म से ही अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न, श्री गुरू नानक देव जी एवं श्री गुरू गोविन्द सिंह की परम्परा के अनुयायी थे। इनमें आध्यात्मिकता एवं ओजस्विता का अद्भुत सामंजस्य था। इन्होंने राष्ट्र के स्वाभिमान तथा सिक्ख कौम की तेजस्विता की स्थापना के लिए 12 अप्रैल सन् 1857 ई. में लुधियाना जिले के गांव भैणी साहिब में श्वेत ध्वज को फहराकर नामधारी पन्थ 'सन्त खालसा' की स्थापना के साथ ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ स्वाधीनता का बिगुल बजा दिया था, परन्तु यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि प्रथम स्वाधीनता संग्राम 10 मई 1857 से ठीक पूर्व अर्थात् 12 अप्रैल 1857 को नामधारी आन्दोलन के प्रणेता सत्गुरु राम सिंह ने जिस आन्दोलन का सूत्रपात किया। इस विषय में पर्याप्त शोध की अपेक्षा है। परन्तु जो ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं, उनके आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सत्गुरु राम सिंह एक दूरदर्शी राजनेता, धर्मसुधारक तथा दिव्य पुरूष थे।

उनके समय की धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ विषम थीं। एक ओर भारतवर्ष ब्रिटिश हुकूमत के अधीन हो गया था और घोर अराजकता व्याप्त थी। मांस–मदिरा का सेवन, चोरी, व्यभिचार, कन्या वध आदि कुप्रथाओं से लोगों का चरित्र पतन के गर्त में समा गया था। सिक्खों की वास्तविक मर्यादा भूलकर लोग ईसाई मिशनरियों के बहकावे में आ रहे थे तथा अपने गौरवपूर्व इतिहास को भुलाकर यूरोप की चकाचौंध से भ्रमित हो रहे थे। ऐसे समय में सत्गुरू राम सिंह ने एक व्यापक जन–आन्दोलन चलाकर सिक्खी की वास्तविक मर्यादा की प्रतिष्ठापना की।

सत्गुरू राम सिंह जिसमें श्री गुरू नानक देव जी की आध्यात्मिकता तथा गुरू गोविन्द सिंह की तेजस्विता दोनों विद्यमान हैं। अपने गहन चिन्तन एवं साधना से उन्होंने समझ लिया था कि राष्ट्र की गिरावट का प्रमुख कारण नैतिक दृष्टि से व्यक्ति का पतित होना है।

ब्रिटिश हुकूमत सत्गुरु राम सिंह और उनके आन्दोलन के राजनीतिक स्वरूप से भली–भांति परिचित नहीं थे, परिचित होते भी कैसे? इसके पूर्व उन्हें बहिष्कार अथवा असहयोग के राजनीतिक प्रयोग का उन्हें कोई अनुभव भी नहीं था। सत्गुरु राम सिंह जी ही वह पहले व्यक्ति हुए जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेने के लिए असहयोग एवं बहिष्कार का रास्ता अपनाया और इस रास्ते पर चलते हुए उन्होंने देश में अपनी सामनान्तर सरकार भी स्थापित कर ली।

# जन जागृति महानायक सत्‌गुरु राम सिंह जी

—डा. वीणा मान

सत्‌गुरु राम सिंह भारतीय दर्शन अध्यात्म जन–सेवा तथा स्वतन्त्रता संग्राम के अमर आलोक पुंज है। अध्यात्म लोक सेवा एवं राष्ट्रीयता का ऐसा अद्वितीय संगम अन्यत्र दुर्लभ है। सत्गुरु राम सिंह जी सच्चे अर्थों में मानवतावादी हैं, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को लोकहित के लिए समर्पित किया। वह अध्यात्म के गहनदृष्टा थे और इसी मूल प्रेरणा को उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आलोकमान किया। सत्गुरु सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे, जिन्होंने मगंलकारी प्रवृतियों को प्रोत्साहन देकर ब्रिटिश साम्राज्य के पाँव तले सिसकते जन–मानस को स्वतन्त्रता का शंखनाद सुनाया। शरीर के स्वतन्त्रता के अभाव में आन्तरिक शान्ति और योग का कोई अर्थ नहीं है। यदि देश स्वतन्त्र नहीं है तो आंतरिक आलोक जिज्ञासा, धर्म साधना प्रज्ञ एवं आंतरिक निष्ठा सब व्यर्थ हैं। जो परतन्त्र है, वह आंतरिक सुख के विधान की परिकल्पना नहीं कर सकता। ऐसा ही पावन उद्‌घोष सत्गुरु राम सिंह जी के व्यक्तित्व और कृतित्व में फलीभूत हुआ।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में कूका लहर का शंखनाद फूँकने वाले सत्गुरू बाबा राम सिंह जी नामधारी पंथ के बानी, स्वतन्त्रता संग्राम के नायक तथा तप, त्याग और सात्विक विचारों की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उनके द्वारा आरम्भ किए राष्ट्रीय आन्दोलन के शंखनाद से जो ध्वनि गुजांयमान हुई, उसने भारत से विदेशी साम्राज्य की जड़ें उखाड़ने में ब्रह्मास्त्र का कार्य किया। अहिंसा का महत्त्व प्रसुप्त जनता की जागृति तथा असहयोग आंदोलन के अस्त्र–शस्त्र जिनका प्रयोग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और उनके उत्तराधिकारियों ने बहुत बाद में किया, सत्गुरु राम

सिंह जी ने उनका श्रीगणेश 19वीं शताब्दी के 7वें दशक में कर दिया था। सत्गुरु अहिंसा आन्दोलन तथा कमजोर वर्गों के उन्नायक ही नहीं, अपितु उनके कल्याणकारी जीवन के प्रेरक भी थे। अपितु उनके कल्याणकारी जीवन के प्रेरक भी थे। इसलिए उन्हें कल्याणकारी जीवन के प्रेरक भी थे। इसीलिए उन्हें राष्ट्रव्यापी ज्ञान–गंगा का भागीरथ कहा जाता है। युगपुरूष राष्ट्र निर्माता और लोक नायक तो थे ही इसके साथ वे सही अर्थों में आध्यात्मिक लगन और प्रभु–स्मरण करने वाले भी थे। उन्होंने युग–युगान्तर से फैले हुए अज्ञान, अन्धकार और दुःखों का निवारण करने के लिए अकाल पुरुख के हुक्मानुसार इस धरती पर अवतार धारण किया था। उनके पवित्र चरणों की स्वर्ण धूली प्राप्त करके केवल यह धरती ही नहीं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जगमगा उठा। वे पाठक, अनुयायी एवं शोध कर्त्ता सचमुच अत्यन्त भाग्यशाली है, जिन्हें ऐसे मननशील तत्ववेत्ता का शाब्दिक दर्शन पाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा निष्काम कर्मयोग तथा मुक्ति का सही मार्ग दर्शाने वाली भारतीय संस्कृति ने जिस ध्यान योग पर ध्यान आकर्षित किया, सत्गुरु राम सिंह जी ने उसी चेतना को अपने जीवन, विचारों एवं कृतित्व में मूर्तिमान किया। भारतीय चिन्तकों, श्रेष्ठ समाज के निर्माणकर्त्ताओं, मनीषियों, विद्वानों ने ऐसे ही व्यक्तियों के जीवन और दर्शन से प्रेरणा प्राप्त करके धर्म निरपेक्ष समाज की सरंचना का बीड़ा उठाया था। सत्गुरु जी ने लोगों को उत्तम, निर्विकार, सादा, सच्चा एवं सात्विक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। प्रभु का स्मरण आंतरिक दृढ़ता प्रदान करता है और इसी के बलबूते पर व्यक्ति स्वतन्त्र समाज में सांस लेने के योग्य हो सकता है। सत्गुरू बाबा राम सिंह जी के व्यवहारिक दर्शन का यही मुख्य सूत्र रहा है। राष्ट्रीयता स्वतन्त्रता

संग्राम का महा संकल्प लेकर और नामधारी आस्था के मार्ग पर अग्रसर सत्गुरु राम सिंह जी देश भक्ति से जुड़े व्यक्तियों और समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गए। धर्म से राजनीति की ओर गमन तथा मानव कल्याण की साधना उनकी सृजनात्मक शक्ति के ज्वलन्त उदाहरण हैं। सतगुरु जी जन जागृति के महानायक हैं।

सत्गुरु जी आदर्श समाज की स्थापना करने के लिए संकल्पनिष्ठ थे। उनके द्वारा प्रेरित आदर्श समाज राम–राज्य की ही विस्तृत परिकल्पना है, जिसको स्वतन्त्र भारत के असंख्य मनीषियों ने अपने राजनैतिक आदर्श की आधार शिला बनाया है। सत्गुरु के आदर्श समाज से अभिप्राय ऐसे सात्विक परिवेश की सरंचना है, जिसमें सभी कर्मजीवी, बुद्धिजीवी और प्रबन्धकर्ता निष्काम भाव से सेवा कर सकें और उसी के अनुसार अपने जीवन और कार्यों को फलीभूत कर सकें। भारतीय संस्कृति जिसको आर्य संस्कृति या राष्ट्रीय जन चेतना कहा जाता है, यह प्राचीन होते हुए भी अपनी गतिशीलता, सर्वकल्याणकारी भावना तथा निजता के कारण पश्चिमी संस्कृति से भिन्न दृष्टिकोण लेकर अपनी सहज एवं संकल्पनिष्ठ साधना में विकास करती रही हैं। सत्गुरु जी ने भारतीय संस्कृति के प्राचीन मूल्यों की स्थापना करते हुए स्वतन्त्रता संग्राम को उत्प्रेरित किया। आज़ादी की लहर को प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का पवित्र संकल्प लिया। उन्होंने अपने प्रगतिशील विचारों से धर्म, राजनीति, संस्कृति, समाज और शिक्षा के क्षेत्र में मानवतावादी दृष्टिकोण प्रचारित किया, सत्गुरु जी की यह देन सचमुच महान् और अभिनंदनीय है।

सत्गुरु राम सिंह जी स्वस्थ लोक जीवन के प्रेरक थे। ब्राह्माडम्बर एवं तड़क–भड़क से परिपूर्ण जीवन उनके लिए अपरिहार्थ था। यही उनके अनुयायी नामधारी आस्था में विश्वास

रखने वालों का मूलमंत्र और साधना है। सहज, सात्विक, सादा और सरल जीवन के साथ उच्च विचार, लोक सेवा तथा देश भक्ति की भावना—ये सत्गुरू जी की वैचारिक चेतना के प्रमुख सूत्र हैं। सत्गुरु रामसिंह जी ने धर्म और देश भक्ति के मार्ग पर चलते हुए संवेदनशील, भावपरक, कुशल एवं सुह्रदयता पूर्ण ढंग से जन साधारण का पथ प्रदर्शन किया। आप सात्विक गुणों के अजस्र स्त्रोत थे। जागरूक और प्रज्ञशील विचारों के स्वामी थे। विदेशी सरकार ने आपको सरकारद्रोह के कारण देश—निकाला दिया। आप सक्रिय स्वतन्त्रता संग्राम से बलपूर्वक दूर हटा दिए गये। आपके सद्‌विचारों, स्वतन्त्रता संग्राम के शंखनाद कूका लहर के अनुयायियों और स्वतन्त्रता सेनानियों पर ब्रिटिश सरकार ने बर्बरतापूर्ण अत्याचार किए। आपके द्वारा प्रज्ज्वलित देशगौरव की मशाल को बुझाने का भरसक प्रयास किया गया, परन्तु आलोक पुरूष के संस्पर्श से प्रकट स्वतन्त्रता संग्राम की ज्योति निष्प्रभ जलती रही, जलती रही।

मांडले जेल से भी सत्गुरू जी अपने उत्प्रेरक विचारों से लोक कल्याणकारी भावनाओं तथा आज़ादी के दीवानों का मार्ग प्रशस्त करते रहे। उनके अनुसार किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए व्यक्तिगत, पारिवारिक, राष्ट्रीय और मानवीय चेतना के अनुरूप पूरा करने के लिए आन्तरिक शक्ति एवं त्याग की आवश्यकता होती हैं। गुरूबाणी और भारतीय दर्शन शास्त्र में आदर्श पुरूष के जिस स्वरूप का वर्णन उपलब्ध है, सत्गुरू बाबा रामसिंह जी ने उसके अनुरूप जीवन व्यतीत किया। आत्मिक दृष्टि से सशक्त होने के लिए परतन्त्रता का जूला उतारने की आवश्यकता है। साधारण जीवन व्यतीत करना तथा भारतीय संस्कृति की सुरक्षा उनके रक्त में थी। वह अपने व्यक्तिगत जीवन और निश्चय को लोक कल्याण की कसौटी पर परख कर इसका

सफल रूप निर्धारित करते थे। उनका सम्पूर्ण चिन्तन भारतीय जन–जीवन की वास्तविक सुगन्ध पाकर निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा है। गुलामी घोर कालिमा हैं, जो आदर्श व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व को प्रच्छन्न कर देती है। सत्गुरु के स्वतन्त्र शरीर को काला पानी क्षेत्र में निर्वासित कर दिया गया।

नामधारी धारण श्वेतता की प्रतीक है। आदर्श जीवन उनकी उज्ज्वलता है। इसलिए सत्गुरु जी ने सात्विक उज्जवल जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हुए स्वतन्त्रता का बिगुल ध्वनित किया। सत्गुरु राम सिंह जी बहुपक्षीय व्यक्तित्व के स्वामी हैं। उनके समाज सुधारक विचार आज भी उदात्त जीवन के मील पत्थर हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन कूका लहर, संत खालसा लहर, नामधारी आस्था, समाज–कल्याण, नारी जागृति, कूकों का प्रशासनिक विधान, आत्म बलिदान, देश के लिए नामधारियों का बलिदान, अंग्रेजों द्वारा दी गई यातनाएं, श्री भैणी साहिब गुरु गद्दी की स्थापना, विदेशी सत्ता के अधीन पनपता सिविल आन्दोलन, आन्तरिक शक्ति के लिए पूर्ण ब्रह्म की दर्शन लालसा आदि सभी दिव्य अनुभव और आशीष से अनुप्राणित रहे हैं। सत्गुरु जी ने जीवन पर्यन्त मानव जाति को अमरत्व का दान दिया। इसलिए सत्गुरु अमर हैं। उनका आलोक जनमानस के लिए जागृति और प्रेरणा का अजस्त्र स्त्रोत हैं और जब तक धरती पर जीव हैं, यह अक्षुण्ण रहेगा।

नाम–स्मरण, शुद्ध–आचरण तथा देश भक्ति–ये मूल त्रिकोण सत्गुरु राम सिंह जी के समूचे अस्तित्व का सार भूत हैं। सत्गुरु राम सिंह जी इतिहास को नई दिशा प्रदान करने वाले युगपुरुष थे। उन्होंने गुलाम देश के उत्थान के लिए ही अवतार धारण किया था। सत्गुरु जी के अद्वितीय व्यक्तित्व, एवं कूका लहर के ऐतिहासिक महत्त्व के संदर्भ में 'इन्साईक्लोपीडिया

ब्रिटेनिका' यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो सन् 1946 पुस्तक 20 पृष्ठ 648 पर लिखा है–

''कूके श्री गुरू गोबिंद सिंह के कटट्र पैरोकार थे। कूके अंग्रेजी शासन के शत्रु थे। उन्नसवीं शताब्दी में जब सिक्ख जनता और सिक्ख सम्प्रदाय वास्तविक सिक्ख मर्यादा ये दूर जा रहा था उस समय भी कूके अपने उदात्त सिद्धान्तों पर पूर्ण स्थिर और निष्ठावान रहें, भले ही उनकी संख्या कम रह गई।''

प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. तारा सिंह चंद ने अपनी पुस्तक भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास, प्रकाशन भारत सरकार, नई दिल्ली में लिखा है–

''राष्ट्रीय भावना राजनीतिक दृष्टि से नामधारी लहर से सम्बद्ध व्यक्तियों ने ही विकसित की थी तत्पश्चात् यही स्वदेशी प्रेम कांग्रेस द्वारा ही असहयोग आन्दोलन में परिवर्तित और रूपान्तरित हुई।''

सन् 1935 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति) ने अपने एक लेख 'श्री सत्गुरु राम सिंह जी के सिद्धान्त' में लिखा है–

'गुरू राम सिंह जी स्वतन्त्रता को भी धर्म का आवश्यक अंग समझते थे तथा नामधारियों का संगठन भी अत्यन्त शक्तिशाली हो गया था। हमारे देश में महात्मा गांधी जी ने जो असहयोग इतने जोर से चलाया, उसको सत्गुरु राम सिंह ने प्रायः पच्चास वर्ष पूर्व नामधारियों में प्रचलित किया था। उनके सिद्धान्त में ये पाँच चीज़े थीं–

1) सरकारी नौकरी का बहिष्कार
2) सरकारी स्कूलों का बहिष्कार
3) सरकारी अदालतों का बहिष्कार

4) विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार
5) ऐसे कानूनों का बहिष्कार जो अपनी आत्मा के विरूद्ध हैं।

प्रसिद्ध लेखक स. खुशवंत सिंह ने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खज़' में नामधारियों के उदात्त संकल्प, सूर्य एवं आदर्श जीवन तथा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में उनके योगदान की भरपूर प्रंशसा करते हुए लिखा है–

'कूके अत्यन्त पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। वे साधारण वस्त्र धारण करते हैं तथा सद् आचरण का पालने करते हैं। गुरुद्वारे में नियमित सेवा करते हैं तथा भोजन आदि की शुद्धता के प्रति सतर्कता रखते हैं। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में भी इनका योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।''

सरदार लाहौर सिंह, सचिव श्री गुरू सिंघ सभा'' अमृतसर, सतियुग माघ 1988 में लिखते हैं– यह बात हम डंके की चोट के साथ कह सकते हैं कि पाप कर्म से दूर करने वाला, उद्धार और सुधार के लिए जन्म लेने वाला, सत्गुरु श्री राम सिंह जी ही अपने समय का अवतार तथा देश रक्षक था।

विश्व के सभी प्रसिद्ध इतिहासकार इस बात के प्रति एक मत है कि यदि अंग्रेज कूका लहर को बर्बरतापूर्ण ढंग से न दबाते तो उनके लिए सत्गुरू बाबा रामसिंह जी महाप्रलय की ही सम्भावना थे। भारतीय दर्शन कर्म योग, ज्ञान योग तथा स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास के शब्द जब–जब प्रकट होंगे, युग पुरूष सत्गुरु राम सिंह जी का स्वर्णिम क्रांतिबीज प्रत्येक सर्जना में स्वतः आलोकमान रहेगा। ऐसे पूर्ण महापुरूष को हमारा शत्–शत् नमन है।

–(पंजाब सरकार के भाषा विभाग पंजाब की त्रैमासिक पत्रिका (सन् 2008) ''पंजाब सौरभ'' में डॉ. वीणा मान (अध्यक्षा, हिन्दी विभाग एस.डी.पी. महिला कॉलेज लुधियाना) के लेख से साभार।)

# नामधारी पन्थ की भूमिका

(हरियाणा इन्साइक्लोपीडिया इतिहास भाग–2, पृष्ठ 412–426)

– स्र्वण सिंह विर्क

नामधारी अपनी सफेद पोशाक, लम्बा तरीजों वाला कुर्ता, चूड़ीदार पायजामा एवं सिर पर गोल पगड़ी जिसे वे 'सीधी पग्ग' या गुरमुखी दस्तार कहते हैं और गले में ऊन की सफेद माला, लम्बी दाढ़ी द्वारा नामधारी सिक्ख अपनी वेशभूषा के कारण हजारों–लाखों की भीड़ में भी सुगमता से पहचाने जाते हैं।

नामधारी मूलतः सिक्ख समुदाय का ही एक भाग है। इनके मठ की स्थापना श्री सतगुरु राम सिंह जी द्वारा की गयी थी। नामधारी और दूसरे सिक्ख समुदाय में मौलिक अन्तर यह है कि नामधारी जिन्हें 'कूका' भी कहते हैं, मानते है कि दशम पातशाह श्री गुरु गोविन्द सिंह ही सिक्खों के अन्तिम गुरू नहीं थे और वे जीवित गुरू (देहधारी गुरू) में विश्वास रखते हैं।

सतगुरू राम सिंह जी का अवतरण 3 फरवरी, 1816 ई. तद्नुसार माघ सुदी पंचमी (बसन्त पंचमी के शुभ दिन) 1872 विक्रमी संवत को जिला लुधियाना के छोटे से गाँव भैणी–राइयाँ में पिता जस्सा सिंह एवं माता सदा कौर के घर हुआ। इनके माता–पिता साधु स्वभाव के थे जो मेहनत–मज़दूरी की कमाई से गुज़र–बसर करते थे। पिता एक कुशल बढ़ई थे जो कृषि कार्य हेतु नये उपकरण भी बनाते थे तथा पुरानों की मुरम्मत करते थे। इनका परिवार कभी–कभी दस्तकारी के साथ दूसरों की भूमि पर खेती–बाड़ी भी किया करता। इनका बहनोई काबुल सिंह लाहौर के सिक्ख राज्य के तोपखाने में रणजीत सिंह के पोते कँवर नौनिहाल सिंह की रेजीमेण्ट में सिपाही भर्ती हुआ।

गुरू राम सिंह का कद छह फुट से ज्यादा और बदन

छरहरा था। ये अपने समय के सुन्दर युवाओं में थे ऐसे युवाओं को महाराजा स्वयं अपने पोते की रेजीमेण्ट में भर्ती किया करता था। लाहौर में आकर ये सिक्खों के सत्ताधारी वर्ग के गिरते आचरण को निकट से देख पाये। 27 जून, 1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के एक साल बाद लाहौर दरबार में तलवार चल पड़ी। एक के बाद दूसरा राज्य का उत्तराधिकारी उनके मन्त्री एवं सलाहकारों का वध करने लगा।

1841 ई. में किसी राजकीय कार्य हेतु सतगुरु राम सिंह को पेशावर जाते हुए हज़रों गाँव (अब पाकिस्तान में) में सैनिक टुकड़ी के साथ रुकना पड़ा। यहाँ इनकी भेंट गुरु बालक सिंह जी से हुई। गुरु बालक सिंह ने इन्हें नाम दान दिया। उनके शुभ उपदेश श्रवण करने पर रंगून से लिखे अपने एक पत्र में सतगुरु जी इस भेंट का उल्लेख करते हैं–

'होर भाई मैं ते बहुत उपाऊ करिके देख रिहा हाँ पर मैंनू ताँ कितों बी नहीं सुख होया। ना तन करके ना मनि करके, ना धन करके ही। पर जद गुरु बालक सिंघ जी ने नाम का दान दित्ता, सारे ई सुख होय गये, तन दे बी, ते मन दे बी, धन दे बी।'

सैनिक जीवन का अपना अनुशासन होता है। अतः सतगुरु राम सिंह को सेना छोड़ने में और 4 वर्ष का समय वहाँ गुज़ारना पड़ा। उनके साधु स्वभाव एवं भजन पाठ में रूचि को भाँप कर अनेक सैनिक इनके साथी बन गये। अतः इनकी पल्टन को 'भगतों की पल्टन' कहा जाने लगा। जब सिक्ख राज्य में गृह कलह चरम पर थी तो अंग्रेजों के साथ मुदकी के स्थान पर 18 दिसम्बर, 1845 ईस्वी को युद्ध आरम्भ हुआ। सिक्ख सेनापतियों ने अपनी सैनिक तैयारियों की गुप्त रिपोर्ट अग्रेंजों को भेजकर सिक्ख सेना के खून में हाथ रँगने की तैयारी की हुई थी। सिक्ख नेताओं

की अचूक वीरता एवं बलिदान की भावना के बावजूद गद्दारों की वजह से वे एक के बाद एक कई लडाइयाँ हारते गये। 29 मार्च, 1849 को पंजाब की राजधानी लाहौर के शाही किले की प्राचीर से सयुंक्त पंजाबी राज्य के प्रतीक केसरी ध्वज को उतार कर इंग्लैण्ड का 'यूनियन जैक' लहरा दिया गया।

## कूका आन्दोलन की पृश्ठभूमि

अंग्रेजों ने छल–कपट से धीरे–धीरे पंजाब पर भी कब्जा कर लिया। अन्तिम सिक्ख सम्राट दिलीप सिंह जो नाबालिग था, उसे उसकी माता महारानी जिन्दकौर के साथ (जो शेरे–पंजाब महाराजा रणजीत सिंह की विधवा होने के कारण, भले ही ज्यादा उम्र की न होने के बावजूद, पंजाबियों द्वारा 'माई' (वृद्ध महिला) कहकर पुकारी जाती थी) पहले पंजाब से बाहर और फिर हिन्दुस्तान से बाहर इंग्लैण्ड में रहने के लिए भेज दिया। महाराजा को तो छोटी उम्र में ही धर्म परिवर्तन करके एक इंग्लिश महिला ट्यूटर लेडी लोगिन के प्रभाव द्वारा ईसाई बना दिया गया। पंजाब में ईसाई मिशनरियों का कार्य बढ़ने लगा। लुधियाना इन गतिविधियों का बड़ा केन्द्र था। इससे पंजाबी में ईसाई मिशनरियों का कार्य बढ़ने लगा। इससे पंजाबी स्वाभिमान को ठेस पहुँच रही थी। तब अंग्रेजों ने रणजीत सिंह के साथ की गयी शर्त, कि यदि कभी अफ़गानिस्तान की ओर जाने हेतु ब्रिटिश सेना पंजाब से गुज़रेगी तो यहाँ गोवध नहीं किया जायेगा, इसे भूलकर पंजाब के अमृतसर समेत बड़े नगरों तथा अन्य छोटे कस्बों में भी गो–वध सरकारी हुक्म से होने लगा।

अंग्रेजों के आने से पहले पंजाब में पशमीने की शाल इत्यादि वस्त्र उद्योग एवं अन्य घरेलू दस्तकारियाँ बहुत विकसित थीं। अंग्रेजों ने भारतीय माल, जो यूरोप में जाता था, उस पर निर्यात शुल्क की दरें बहुत बढ़ा दीं एवं ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं

पर भारत में आने पर नाम मात्र शुल्क लिया जाने लगा। व्यापार की असमान शर्तों की वजह से देशी उद्योग–धन्धे पिट गये। खेती–बाड़ी में पहले अनाज के एक निश्चित भाग के रूप में सरकार अपना हिस्सा लेती थी जो फसल की मात्रा के मुताबिक कम या ज्यादा होता था। अब नकदी के रूप में 'मालिया' लिया जाने लगा। ज़मीन की स्वामित्व का एक बड़ा भाग अंग्रेजों ने सिक्ख युद्धों में अपने लोगों से गद्दारी करने वाले नये सरकारी वफदारों को जागीरों के रूप में दे दिया। बहादुरी से अपनी माटी मान–मर्यादा कायम रखने हेतु अपने प्राणों को उत्सर्ग करने वालों की न सिर्फ धन–सम्पदा ज़ब्त कर ली गयी। अपितु उन्हें गिरफ्तार करके पंजाब से बाहर दूसरे प्रान्तों व देशों की जेलों में कैद कर दिया गया। जब 29 मार्च, 1849 के लाहौर दरबार को अन्तिम स्वतन्त्रत समागम में रेजीडेंट हेनरी लारेंस ने लाहौर दरबार के तमाम क्षेत्र को कम्पनी सरकार में सम्मिलित करने की घोषणा की तो एक दरबारी दीवान दीना नाथ ने आँसुओं की बरसात में याचना की है कि जैसे फ्रांस हो हराने के बाद भी अंग्रेंजो ने फ्रांस नेपोलियन बोनापार्ट के वारिसों को सौंप दिया था, ऐसी ही उदारता दिखायें और पंजाब महाराजा दलीप सिंह के हवाले करें। यह अनुरोध सुनकर रेजीडेंट ने डाँट लगाई, 'खामोश हो जाओ, वरना काले पानी भेज दिये जाओगे।' अंग्रेजी प्रबन्ध में आने के बाद सिंचाई के पुराने प्रबन्धन की सँभाल न होने की वजह से साधन नष्ट हो गये। इससे खेती–बाड़ी भी छिन्न– भिन्न हो गयी। व्यापार और दस्तकारियाँ तबाह होने लगे। सिक्ख सेना तोड़े जाने से बहुत से पंजाबी युवा बेरोजगार हो गये। सतगुरु राम सिंह जो एक बहुआयामी व्यक्तित्त्व के स्वामी, कुशल दस्तकार और सैनिक थे, ने व्यवसायी सरकार की स्थापना से पड़ने वाले दुष्प्रभावों को सबसे अधिक गहराई से महसूस किया। पंजाब में राष्ट्रीय गौरव की पुनः प्राप्ति और देश की स्वतन्त्रता अर्जित करने

के लिए यहीं से शुरू हुई– नामधारी या कूका आन्दोलन की भूमिका।

12 अप्रैल, 1857 ईस्वी को बैसाखी के शुभ दिवस पर गाँव भैणी जिसे अब सतगुरु राम सिंह जी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण 'भैणी साहब' कहा जाने लगा था, में इन्होंने सिक्ख पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का आरम्भ खण्डा लगी लम्बी लाठी में सफेद तिकोना ध्वज फहराकर किया। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की तरह 'श्री आदि ग्रन्थ साहिब' एवं 'श्री दशम ग्रन्थ साहब' में से वाणी के पाठ के साथ लोहे के बड़े बाटे में खण्डे को, गुड़ मिले जल में घुमाकर अमृत तैयार किया। पहले पाँच सिंह निम्नलिखित थे जिन्हें अमृत छकाया और कान में गुप्त उचारने हेतु गुरुमन्त्र की दीक्षा दी–

(1) **भाई काहन सिंह निहंग**, गाँव चक्क, मलेरकोटला, लाहौर में सैनिक जीवन के साथी थे।

(2) **भाई लाभ सिंह 'रागी'** (इनकी नेत्र ज्योति नहीं थी), पुराना नगर नवांशहर, ज़िला जालन्धर था; उस समय अमृतसर नगर में गुरुबाणी कीर्तन किया करते थे।

(3) **भाई आत्मा सिंह,** प्रकाण्ड विद्वान, गाँव आलोमुहार, ज़िला स्यालकोट।

(4) **भाई नैणा सिंह,** गाँव बरियाँह, ज़िला अमृतसर; भाई लाभ सिंह की प्रेरणा से 'भैणी साहब' पहुँचे थे। सतगुरु के दर्शनों हेतु रंगून में भी गये अैर हुक्मनामे भी लेकर आये। सतगुरु जी के गंगा दौरे के समय साथ थे।

(5) **भाई सुध सिंह,** गाँव दुर्गापुर, ज़िला जालन्धर।

अपनी प्रथम संगत को सतगुरु जी द्वारा दिये गये उपदेश का सार इस तरह है जिन्हें 'नामधारी मर्यादा' कहा जाता है–

**सदाचार**

मांस–मदिरा आदि सभी तरह के नशों, चोरी–चकारी, छल–कपट, धोखा, झूठ, फरेब एवं व्यभिचार का त्याग, ब्याज नहीं लेना, गरीबों को एक मण (लगभग चालीस किलो), दाने देकर, फसल आने पर मण का डेढ़ मण नहीं लेना।

अमृत समय (सूर्योदय से तीन घंटे पूर्व) बिस्तर छोड़कर दिनचर्या नित्त–नेम, बाणी–पाठ आदि में लग जाना, सादा खाना, सादा पहरावा, बैठने के लिए ऊनी वस्त्र का टुकड़ा आसन कहा जाता है, पाँवों में लकड़ी की खड़ाऊँ, गड़वा (कुएँ से जल निकालने हेतु लोहे का मटके जैसा बर्तन), अपने हाथ से खाना बनाना, संयम, अतिथि–सत्कार एवं अत्यधिक सफाई रखना, गोरक्षा, यज्ञ–होम करना एवं 'पाँच कक्कार' की मर्यादा धारण करना, अहिंसा का पालन आदि।

**सामाजिक**

लड़कियों को जन्म के समय ही मार देना, पैसा लेकर बेच देना, बाल विवाह, बट्टा या तबादले द्वारा बेमेल ब्याह, विधवा को दोबारा शादी न करने देना, दान–दहेज लेना या देना का मुकम्मल निषेध। ब्याह, शादियाँ एवं मृत्यु की रस्में अति सादा व बिना खर्च करना।

**राजनीतिक**

सरकारी नौकरी नहीं करना, सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ना, अपने तमाम झगड़े अपनी पंचायतों में निपटाना, कोर्ट–कचहरी में नहीं जाना, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, सरकारी डाक में पत्र नहीं भेजना, सरकार द्वारा चलायी रेलगाड़ी में सफ़र नहीं करना।

सतगुरु जी की इस शिक्षा से प्रभावित होकर कुछ ही वर्षों में अटक से (अब पाकिस्तान में) लेकर यमुना नदी के बीच वाले क्षेत्र में लोग हज़ारों की संख्या में इनके झण्डे तले एकत्र होने शुरू हो गये। इन्होंने समझ लिया था कि सिक्ख साम्राज्य के पतन का कारण सिक्ख चरित्र का ह्रास था। इसलिए अपने गुरसिक्खी के पुरातन मार्ग पर चलने का लोगों को उपदेश दिया। ज्ञानी ज्ञान सिंह ने इनकी शिक्षा द्वारा पंजाब के जनजीवन में आयी क्रान्ति को कलियुग में दोबारा सतयुग लौट आना बताया है।

सतगुरु के सिक्खों को नाम जपने के कारण **'नामधारी'** और अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध बड़े जोर–शोर से चिल्ला–चिल्लाकर (जिसे पंजाबी में 'कूक' पुकार या 'कूक मारना' कहते हैं) लोगों को लामबन्द करने हेतु **'कूका'** कहा जाने लगा। अतः इस सम्प्रदाय का धार्मिक नाम **नामधारी** तथा राजनीतिक नाम **कूका** है। यही कारण है कि अंग्रेजों ने अपने दस्तावेज़ों में इस आन्दोलन को **'कूका विद्रोह'** की संज्ञा दी है और ज्यादातर नामधारियों के लिए सरकारी कागज़ों में कूका नाम का ही प्रयोग हुआ है। वैसे इस नाम–करण के कुछ भौगोलिक कारण भी हैं। पश्चिमी पंजाब के ज़िला स्यालकोट में, उपायुक्त टूलोच के मुताबिक नामधारी दीवानों में एक वर्ष के समय में 80,000 ऊन की मालाएँ बाँटी गयी थीं। इस ज़िले में इनकी संख्या पंजाब भर में सबसे ज़्यादा थी। इस सम्प्रदाय से जुड़े लोगों को नामधारी कहा जाता था जबकि पंजाब के मालवा क्षेत्र में इन्हें 'कूका' कहा जाता था।

सतगुरु राम सिंह ने पुरुष अनुयाइयों को अमृत छकाने के 6 वर्ष बाद लुधियाना ज़िला के एक गाँव सियाड में 1 जून, 1863 को महिलाओं को भी खण्डे बाटे का अमृत छकाया (दीक्षित करना)

और सिक्ख मर्यादा के चिह्न धारण करवाये। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को सामाजिक एवं धार्मिक समानता देकर उन्हें भी अपने राजनीतिक मिशन की पूर्ति हेतु हिस्सेदार बनाना था। भले ही चौथे गुरु रामदास जी ने आनन्द मर्यादा में पढ़ी जाने वाली 'लावां' नाम की वाणी की रचना तो बहुत पहले कर दी थी। 3 जून, 1863 को खोटे गाँव, ज़िला मोगा (तत्कालीन फिरोज़पुर) में सतगुरु जी ने छह जोड़ों के अन्तर्जातीय विवाह गुरुवाणी पाठ, होम की अग्नि प्रचण्ड कर आनन्द मर्यादा की नींव डाली। इससे ब्राह्मणों ने इनके खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई कि सतगुरु राम सिंह शताब्दियों से चले आ रहे उनके यजमानी के अधिकार को छीन रहे हैं। फिरोज़पुर के उपायुक्त ने गुरु रामसिंह को बुलाया और पुलिस की निगरानी में 'भैणी साहिब' पहुँचाकर सन् 1863 से 1866 ई. तक उन्हें बिना सरकार की पूर्व अनुमति के भैणी साहिब न छोड़ने को पाबन्द कर दिया।

भैणी साहिब में नज़रबन्द होने के बाद सतगुरु राम सिंह ने अपनी गतिविधियाँ जारी रखने हेतु पाँच सूबे (गवर्नर) नियुक्त किये जिनके नाम इस प्रकार हैं–

(1) बाबा जवाहर सिंह, गाँव लोपों, बिलासपुर एवं भाई की डरौली ज़िला मोगा।

(2) बाबा काहनसिंह निहंग, गाँब चक्क कलां (मलेरकोटला)।

(3) बाबा सुध सिंह, गाँव मढौर, ज़िला अम्बाला।

(4) बाबा साहेब सिंह, गाँव बंगालीपुर, ज़िला अमृतसर।

(5) बाबा लखा सिंह, मलौद, ज़िला लुधियाना।

(उपरोक्त प्रथम पाँच, शिष्यों पर पाबन्दी आयद होने के बाद निम्नलिखित 17 सूबे और निर्धारित किये गये–)

(6) बाबा अरूण सिंह, सूबा साहेबसिंह के भाई, गाँव बंगालीपुर।

(7) बाबा सरमुख सिंह, गाँव लल्लूवाल (मानसा)।

(8) बाबा जमीयतसिंह, गाँव गिल्ल, ज़िला रायकोट।

(9) बाबा ज्ञानीसिंह उर्फ रतनसिंह सुपुत्र रामकिशन जाट, इनका जन्म गाँव बड़ोपल, ज़िला फतेहाबाद का था। बाद में मण्डी कलां (भटिण्डा) में आबाद हुए।

(10) बाबा मान सिंह, गाँव सैदो, फिरोज़पुर।

(11) बाबा ब्रह्मा सिंह सपुत्र गुलाब सिंह, गाँव दरियापुर, ज़िला फतेहाबाद; कुछ जगह इनका थाना बुढलाडा और ज़िला कैथल या करनाल लिखा हुआ है। ज़िलों की सीमा बदलती रही है।

(12) भगवान सिंह, गाँव फत्तेहवाल, ज़िला अमृतसर।

(13) बाबा राजा सिंह, गाँव तरांडी (स्यालकोट)।

(14) बाबा हुकम सिंह, गाँव पित्थो (भटिण्डा)।

(15) बाबा मलूक सिंह, गाँव फलेवान (फिरोजपुर)।

(16) बाबा जोता सिंह, गाँव ढपई (स्यालकोट)।

(17) बाबा खजाना सिंह, गाँव लधाणा (जालन्धर)।

(18) बाबा नारायण सिंह, गाँव खटड़े (लुधियाना)।

(19) बाबा समुन्द सिंह, गाँव खोटे (मोगा)।

(20) बाबा पहाड़ा सिंह, गाँव मलौद (लुधियाना)।

(21) बाबा गोपाल सिंह, गाँव रकखड़ मरोड़ (रियासत पटियाला)।

(22) बाबा खुशहाल सिंह, गाँव थिराज, ज़िला सिरसा। (सतगुरू प्रताप सिंह जी, महाराज निहाल सिंह पूर्व सांसद एवं महाराज गुरदयाल सिंह की माता जीवनकौर के पिता थे।)

पहले पाँच सूबाओं के बाद जब उपरोक्त 17 सूबाओं, जो पंजाब के विभिन्न ज़िलों में धार्मिक एवं राजनीतिक ब्रिटिश विरोधी प्रचार में सक्रिय थे, को अपनी–अपनी सीमा में नज़रबन्द करने के

बाद पंजाब का लैफ्टीनेंट गवर्नर (लाट पंजाब) 'भैणी साहब' पहुँचकर सतगुरु जी से पूछने लगा, 'पहले आपको नज़रबन्द किया, फिर आप द्वारा बनाये पाँच सूबों को और अब आपने जो 17 नये बनाये थे, हमने उन्हें भी जूहबन्द कर दिया है। अब आप क्या करेंगे?' श्री सतगुरु जी ने छाती ठोक कर कहा, 'ओ बिल्लिया! तूं इक रामसिंह नूं रोंदा हैं, मैं घर–घर राम सिंह कर दियांगा।' अर्थात् हे फिरंगी! तू एक राम सिंह के लिए रो रहा है। (थोड़ा इन्तज़ार करो) मैं प्रत्येक घर में एक–एक रामसिंह पैदा कर दूँगा। (जो आपके साम्राज्य का पटाक्षेप करेंगे।)

डॉ. फौजसिंह बाजवा के मुताबिक देश की रियासतों और पड़ोसी देशों में प्रचार क़ार्य हेतु निम्नलिखित सूबे बनाये गये थे–

(1) सूबा बिशन सिंह– काबुल
(2) सूबा नारायण सिंह– ग्वालियर एवं मध्य भारत
(3) सूबा काहन सिंह–बनारस
(4) सूबा साहेब सिंह एवं सूबा काहन सिंह –नेपाल
(5) सूबा हीरा सिंह लम्बू –कश्मीर

इसी समय अफगानिस्तान के अमीर अब्दुल रज़ाक के दो बेटे सतगुरु राम सिंह के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध कायम करने हेतु 'भैणी साहब' पहुँचते हैं। अंग्रेज अधिकारियों ने इस सम्बन्ध से अपने रिकॉर्ड में दर्ज किया कि इससे सिद्ध होता है कि एक साधारण ग्रामीण बढ़ई की महिमा कहाँ तक फैल चुकी है। रियासत जम्मू–कश्मीर सरदार हीरा सिंह सढ़ौरा (अम्बाला) के नेतृत्व में 250 नामधारी सिक्ख वहाँ की सेना में एक अलग रेजीमेंट बनाकर सन् 1870 में भर्ती किये गये थे। इसी तरह सन् 1870 के दिसम्बर में सूबा काहन सिंह एवं सूबा साहब सिंह नेपाल के राजा जंग बहादुर के बुलावे पर शाही मेहमान बनकर गये। राजा ने सतगुरु राम सिंह के मिशन में दिलचस्पी प्रकट

की। सिक्ख दरबार के अनेक सैनिक एवं सन् 1857 के बहुत से वीर सेनानी नेपाल दरबार में अपना समय व्यतीत कर रहे थे। महारानी जिन्द कौर भी चुनार किले की कैद से भागकर नेपाल सरकार की शरण में रह रही थी। महाराजा ने सतगुरु जी के दूतों का न सिर्फ स्वागत–सत्कार किया बल्कि कुछ कीमती सौगातों का आदान–प्रदान भी हुआ और नामधारी दरबार के साथ नेपाल दरबार ने समानता के सम्बन्ध कायम करके मैत्री भाव प्रदर्शित किया। 15 जून, 1871 ईस्वी में अमृतसर में बुच्चड़–वध हुआ जिसमें पाँच नामधारी सिक्खों लहणा सिंह, फतेह सिंह, हाकम सिंह और बीहला सिंह को मृत्यु दण्ड दिया गया। दूसरे लहणा सिंह और लाल सिंह को काला पानी भेज दिया गया। भगवान सिंह, मेहर सिंह इत्यादि भगोड़े करार दिये गये। इस घटना के बाद जम्मू–कश्मीर की कूका रेजीमेंट तोड़ दी गयी और नामधारियों पर सरकारी दमन–चक्र शुरू होने के पश्चात् नेपाल नरेश का उनके प्रति उत्साह ठण्डा पड़ गया।

अपने ऊपर लगी पाबन्दियों को धता बताते हुए सतगुरु राम सिंह ने मार्च 1867 ईस्वी में खालसा के जन्म स्थान 'आनन्दपुर साहिब' के 'होला मोहल्ला' के पर्व में 25,000 नामधारियों के साथ भाग लिया। सरकार को इनकी तैयारियाँ देखकर पाबन्दियाँ उठाने पर बाध्य होना पड़ा। तख़्त केस गढ़ साहेब के पुजारियों ने सरकार को आवेदन दिये कि सतगुरु राम सिंह एवं उनके अनुयायी गुरुद्वारा साहेब पर क़ब्जा जमाने आ रहे हैं। सरकार ने सुरक्षा के व्यापक प्रबन्ध किये। सरकारी आज्ञा की परवाह किये बिना आनन्दपुर होला पर्व में इतनी बड़ी संगत के साथ भाग लेने की इनकी कार्यवाही ब्रिटिश सरकार को एक चेतावनी थी कि अब उनके अनुचित आदेश नहीं माने जायेंगे। सन्त निधान सिंह आलिम इसे सतगुरु जी एवं नामधारियों द्वारा

किये गये पहले व्यापक सत्याग्रह की संज्ञा देते हैं। इससे पहले वे ब्रिटिश वस्तुएँ एवं संस्थाओं का बाईकाट करके सरकार के विरूद्ध असहयोग की नीति का ऐलान कर चुके थे।

आनन्दपुर के उपरोक्त होला पर्व में पंजाब पुलिस का एक डी.आई.जी मैक ऐन्ड्रीओ, होशियापुर का सहायक पुलिस कप्तान हैथल भारी पुलिस बल के साथ पर्व से पूर्व आनन्दपुर पहुँच गये। इस दल-बल को देखकर निहंग सिक्खों का एक टोला जो नामधारियों के साथ फसाद करने का इरादा रखता था, शान्त हो गया, जिन्हें तख़्त साहेब के पुजारियों ने बुलाया था। बाद में जालन्धर का कमिश्नर फोरसाइथ भी पहुँच गया। इन सभी अधिकारियों ने सतगुरु जी से भेंट की। वे नामधारी सिक्खों की इतनी बड़ी संख्या में भी मुकम्मल अनुशासन में रहने और सतगुरु जी व उनके सूबाओं का प्रत्येक आदेश पालन करने की भावना देखकर दंग रहे गये।

डी.आई.जी. मैक ऐन्ड्रीओ सतगुरु जी के कैम्प में जाकर उनसे बातचीत कर अत्यधिक प्रभावित हुआ। वह लिखता है कि-

'गुरू रामसिंह नामधारियों के बीच में एक शमियाने के नीचे विराजमान थे। इस समय हज़ार आदमी मौजूद थे। दूसरे अनगिनत सिक्ख चारों ओर से इधर आ रहे थे। कैम्प में कोई शोर-शराबा नहीं था। मुकम्मल खामोशी थी। बहुतेरे आदमी-औरतों ने बढ़िया वस्त्र धारण किये हुए थे। मैंने किसी भी व्यक्ति को उन्माद, जोश या बेहोशी की अवस्था में नहीं देखा। गुरु रामसिंह जी मुझे बड़े प्रेम-प्यार एवं सम्मान के साथ मिले।'

अक्तूबर 1867 ईस्वी में दीपावली के मौके पर सतगुरु राम सिंह जी ने फिर अमृतसर जाने का इरादा किया और सरकारी आज्ञा न मिलने पर भी अनुयाइयों को वहाँ पहुँचने हेतु सन्देशा

भेजा। सरकार को पुनः आनन्दपुर की भाँति उनकी इच्छा में विघ्न न डालना हितकर लगा। यह इनका दूसरा सत्याग्रह था। सरकार को गुप्चरों से सूचना मिली कि 15,000 नामधारी अमृतसर जायेंगे। लेकिन इस बार भी आनन्दपुर की भाँति 20 से 30 हज़ार सन्त जन एकत्र हुए। आनन्दपुर की तरह अमृतसर के सिक्ख तख्तों (Seat of Temporal Authority) के पुजारियों ने जो ब्रतानवी सरकार के प्रभाव में थी, इनकी भेंट स्वीकार न करते हुए प्रसाद नहीं लिया जिस पर इन्होंने स्वयं अरदास करवा कर प्रसाद बाँट दिया। पुजारी उन पर सिक्ख मर्यादा के विरूद्ध आचरण करने के बेबुनियाद दोष लगा रहे थे, जैसा कि मस्ती में इनके सिक्खों के सिर पर बाँधी हुई पगड़ी उतर जाती है और इनके केस बिखर जाते है। इसके उत्तर में सतगुरू जी ने कहा कि गुरबाणी शब्द के गायन को श्रवण कर वे लोग अपनी देह से बेसुध हो जाते हैं। वह आग, पानी में गिर सकते हैं। ऐसे मस्ताने–दीवाने लोग शराअ (धार्मिक नियमावली) की पाबन्दियों में नहीं बाँधे जा सकते। वैसें हमारे लोग गुरसिक्ख मर्यादा पर पूर्णतया चलते हैं। चोरी, व्यभिचार, झूठ–फरेब, छल–कपट, लूट पाट, मांस–मदिरा और अन्य मादक पदार्थों का सेवन नहीं करते जबकि पुजारी समुदाय ऐसी बुराइयों में लिप्त है। इस तरह सतगुरु जी अपने नामधारी सिक्खों समेत गुरुद्वारों के दर्शन करके विभिन्न गाँवों में पड़ाव करते वापिस अपने डेरे भैणी साहिब लौट आये। ज्ञानी ज्ञान सिंह ने देशभक्त नामधारियों को सिक्ख पन्थ से अलग–थलग करने की अंग्रेज़–भक्त पुजारियों की कार्यवाही को 'पन्थ दूध में कांजी डालने के तुल्य' लिखा है।

नामधारी सिक्खों ने सूबा साहेब सिंह के कुशल नेतृत्व में अपना डाक का महकमा गठित किया जिसे सरकारी दस्तावेज़ों में 'कूका पोस्टल सर्विस' का नाम दिया गया है। साहेबसिंह की

डाक व्यवस्था इतनी सृदृढ़ थी कि 24 घण्टे में उनका सन्देश पंजाब के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाता था। सरकारी डाक की गति से कहीं तेज़। सन्देशा मिलते ही 'कूका स्वयंसेवक' भले ही खाना खा रहा होता, वह अपना ग्रास मुँह में ही लेकर अगले पड़ाव की ओर भाग उठता था। सरकार भी सूबा साहेब सिंह की डाक–व्यवस्था का पता लगाने में विफल रही। गाँवों की संगत संगठन की पहली इकाई थी जिसके प्रधान सुनिश्चित थे। कई गाँवों के ऊपर क्षेत्रों के जत्थेदार थे। इन क्षेत्रीय जत्थेदारों के ऊपर नायब सूबा थे। सूबों की केन्द्रीय पंचायत के मुखिया सूबा जवाहर सिंह थे। सबसे ऊपर सतगुरु जी का स्थान था। सूबे संगत और सतगुरु के बीच कड़ी थे।

इस तरह नामधारियों ने दरअसल अपनी एक 'समानान्तर सरकार' का गठन कर लिया था। जिसका गृह एवं विदेश विभाग सूबा साहेबसिंह के पास था। इस युवा अति उत्साही क्रियाशील एवं सदैव नयी योजनाएँ बनाने वाले महत्त्वाकांक्षी सूबे को अंग्रेज सरकार सतगुरु राम सिंह का उत्तराधिकारी मानती थी। सैनिक विभाग सूबा लक्खा सिंह के ज़िम्मे था। लक्खा सिंह भी सन 1857 के महासंग्राम में भाग ले चुका था। इस विभाग में हीरा सिंह 'लम्बू' सढौरा वाला भी शामिल थे। सढौरा के दो हीरा सिंह नामक मुख्य नामधारी थे। दूसरे का कद छोटा था। उसे 'मधरू' कहा जाता था। सूबा पहाड़ा सिंह सतगुरु जी के सूचना तन्त्र को देखता था और समुदाय में सरकारी खुफिया आदमियों पर भी निगरानी रखना उसका काम था। सूबा ज्ञान सिंह उर्फ रत्न सिंह न्यायिक विभाव का काम देखता था। इस तरह बाकी सूबों के विभागों का बँटवारा किया गया था। सरदार मंगल सिंह बिशनपुरा (लुधियाना) पटियाला, धौलपुर इत्यादि के राजाओं का निकट सम्बन्धी था। वह कूका आन्दोलन को बड़ी धनराशि उपलब्ध

करवा कर उनके लिए 'भामाशाह' था। विदेशों में सम्बन्ध कायम हो रहे थे। सेना पुलिस में विभिन्न स्थानों पर नामधारी ट्रेनिगं ले रहे थे। इस तरह समय आने पर ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध एक व्यापक विद्रोह की तैयारी की जा रही थी। इससे सरकार कूका आन्दोलन के प्रति और ज़्यादा सजग रहने लगी।

मार्च 1869 ईस्वी में 'होला मोहल्ला' पर मसतान सिंह कूका ने मुक्तसर के पास अपने गाँव थराजवाला में नामधारियों को आमन्त्रित किया। बहुत से अलबेले नामधारी अपने घरों को बिना ताला लगाये अति उत्साह में अपने घरों से अनाज, नकदी, सोना–चाँदी के गहने लेकर रूपाणा गाँव में मसतान सिंह के नेतृत्व में इकट्ठे हो गये जिनमें पाँच सौ की संख्या में महिलाएँ तथा बच्चे–बूढ़े भी शामिल थे। ये लोग एक जगह भोजन बनाकर सांझा लगंर करते थे। जब रूपाणा से थराज वाला को जा रहे थे तो इतने कूकों को इकट्ठा होने की खबर सुनकर दीवान बख्शनाम का थानेदार उनका पीछा करने लगा। जब वह समझाने–बुझाने पर भी वापस न लौटा तो उन्होंने घोड़े से उतार कर उसकी मरम्मत कर दी। उसकी तलवार तोड़ दी और वर्दी फाड़ डाली। साथ में यह भी कह दिया अब यहाँ फिरंगी का नहीं अपितु नामधारी सन्त खालसा का राज हो गया है। फिरोजपुर से उच्च अधिकारी बड़ा पुलिस बल लेकर आये। 44 कूकों को गिरफ्तार करके मलौट और वाया मुक्तसर फिरोज़पुर भेज दिया। क्षेत्र के सूबा मलूक सिंह फूलेवाल को इस घटना को उकसाने वाला माना गया जिस दोष में उसे बाद में सन 1872 में जलावतन किया गया था। 7 आदमियों को कुछ महीनों की कैद जुर्माना किया गया। नेता मसतान सिंह, जिसका दूसरा नाम समुन्द सिंह भी था, को डेढ़ वर्ष तक कैद किया गया। 7 लोगों को चेतावनी दी गयी और 30 बिना मुकद्दमा चलाये छोड़ दिये। सरकारी रिकॉर्ड में इस

कूका बगावत के बहाने नामधारियों की सम्पूर्ण सम्पत्ति, पैसा–टका, सोना, चाँदी, अनाज, बर्तन इत्यादि ज़ब्त कर लिये गये। इस घटना से भी सरकार भयभीत हुई कि 'कूका पन्थी' देर–सवेर अपना राज्य कायम करना चाहते हैं। इस राजनीतिक मिशन की पुष्टि करते हुए ज्ञान ज्ञान सिंह नामधारी सिक्खों को दशम गुरु के सच्चे सिक्ख बताते हैं।

सरकार सतगुरु राम सिंह की बढ़ती लोकप्रियता से भयभीत थी। अम्बाला के कमिश्नर आर.जी.टेलर ने 11 सितम्बर, 1866 को पंजाब सरकार के सचिव के नाम अपने पत्र में लिखा– 'सतगुरु रामसिंह को गिरफ़्तार करके वाया लाहौर, मुलतान, बम्बई या वाया दिल्ली कलकत्ता भेजकर उसे अपने कर्मक्षेत्र से अलग कर दिया जाये।' उसने सेना एवं पुलिस से कूकाओं के निष्कासन पर भी बल दिया और कहा, 'सतगुरु राम सिंह की गिरफ़्तारी के समय कुछ गड़बड़ भी हो सकती है। परन्तु यदि हम चार–पाँच माह बीतने देंगे तो उसे फिर नियन्त्रित करना कठिन होगा।'

इसी रिपोर्ट के अन्तिम पैरा में दर्ज है कि 'राम सिंह ने एक नरमपन्थी धार्मिक सुधारक के तौर पर अपना कार्य (गुरू) नानक की तर्ज पर शुरू किया था लेकिन अब हल्ला–गुल्ला करने वाले उसके सूबे उसे युद्ध भूमि में उतरने वाले (गुरु) गोविन्दसिंह के रूप में देखना पसन्द करते हैं।'

1871 ईस्वी में अमृतसर, रायकोट, मोरिन्डा आदि स्थानों पर कूका सिंहों ने गौ–वध करने वाले बूचड़खानों का सफाया किया। भले ही सतगुरु जी अपनी अहिंसावादी नीति के कारण किसी भी ऐसे कार्य की अनुमति नहीं देते थे। इस सम्बन्ध में नामधारी इतिहास में कुछ भ्रान्तियाँ पैदा हो गयी हैं। सोवियत इतिहासकार भी कूकों की इस कत्ल–ओ–ग़ारत की नीति को मुसलमानों के विरूद्ध आक्रमण मानकर साम्प्रदायिकता के दायरे में

ले आते हैं। परन्तु तमाम घटनाओं की गहन छानबीन से वास्तविकता इससे भिन्न साबित होगी। सिक्ख राज्य में गोवध कर मुकम्मल प्रतिबन्ध था। पंजाब का मुस्लिम समुदाय भी 80–85 वर्ष से गो–मांस खाने की आदत छोड़ चुका था। सन 1849 ईस्वी में पंजाब की सत्ता हथियाने के बाद सरकारी पॉलिसी इस बयान द्वारा स्पष्ट की गयी–

'किसी को यह आज्ञा नहीं कि वह अपने पड़ोसी के उन रीति–रिवाजों में दखल–अन्दाजी करे जिनका पालन उनके धर्म द्वारा किया जाता है।'

इसी नीति के तहत पंजाब में खुले आम गोवध होते बूचड़खाने खोल दिये गये। गो–मांस टोकरों में डालकर बाज़ारों में बिकने लगा। अमृतसर शहर में तो साम्प्रदायिक दंगे भी हुए। इस वजह से नगरपालिका के हिन्दू–मुस्लिम सदस्यों ने आपसी सहमति में आगामी वर्ष हेतु गोवध का ठेका न दिया जाने का प्रस्ताव कर दिया। यह जानकर अंग्रेज़ कमिश्नर गुरदासपुर से अमृतसर पहुँचा और नगरपालिका में दोबारा प्रस्ताव पास करवाया कि अमृतसर का बूचड़खाना पहले की तरह अपना काम करेगा। कूका सिक्ख जान गये कि बूचड़खाने खोलने और चलाने की ज़िम्मेदारी मुसलमानों की बजाय अंग्रेजों की है। अतः गौ–घातकों को सज़ा देकर नामधारियों ने मुसलमानों पर नहीं बल्कि अंग्रेज़ सरकार पर हमला किया और सरकार ने भी ऐसी कारवाइयों को उनकी सत्ता का सीधा विरोध माना।

पंजाबी दैनिक 'नवाँ जमाना' के सम्पादक कामरेड अर्जुन सिंह 'गड़गज्ज' के मतानुसार 'नामधारी आन्दोलन को साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश की। मेरी राय में गौ–घातकों को नहीं अपितु गोवध करने वाले बूचड़खानों को समाप्त करना चाहते थे। वे बूचड़खानों को अंग्रेजों द्वारा साम्प्रदायिकता की

भावना उत्तेजित करने की जगह समझते थे जिससे हिन्दू–मुस्लिम दंगे भी हो सकते थे और बाद में ऐसे दंगे हुए भी।'

नामधारियों ने अमृतसर गोवध की घटना द्वारा ब्रिटिश न्यायप्रणाली की जड़ों को भी गहरा झटका दिया। हुआ यूँ कि जब सरकार असली हत्यारों को पकड़ न पायी तो बदनाम सी. आई.डी. इन्सपेक्टर क्रिस्टी ने निर्दोष लोगों को ऐसी यातनाएँ दीं कि इन कष्टों को सहन करने की बजाय उन्हें फाँसी के फन्दे पर झूल जाना आसान लगा। झूठे वायदा–माफ बन गये और सेठ जयराम जैसे प्रतिष्ठित लोगों ने गौ–घातकों की हत्याओं को इकबाल कर लिया।

इन घटनाक्रमों में एक दर्जन नामधारी सिक्खों को मृत्युदण्ड और काले पानी की सज़ा दी गयी। रायकोट में तीन नामधारी 5 अगस्त, 1871 को, अमृतसर में चार सिंह 15 सितम्बर, 1871 को और झण्डा सिंह अगस्त 1873 में फाँसी पर लटकाए गये। सूबा ज्ञानी सिंह एवं नायब सूबा रतन सिंह नायीवाला 26 नवम्बर, 1871 को लुधियाना जेल में फाँसी द्वारा शहीद किये गये। सूबा ज्ञानी सिंह की चीफ कोर्ट ट्रिब्यूनल का तीसरा सदस्य बोलीनीस पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में मृत्युदण्ड की बजाय काले पानी भेजना चाहता था किन्तु पंजाब सरकार उस द्वारा कूका आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने से भयभीत थी। ज्ञानी सिंह की मृत्यु एक कानूनी हत्या थी। ज्ञानी सिंह ने फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर अंग्रेज अधिकारियों को बुलन्द आवाज़ में सम्बोधित करते हुए कहा– 'बिल्लिया! मुँह तां सामने रख, पीठ क्यों कित्ती है? दस महीने किसे जट्टी दी कुख विच कट्ट के फेर आया जाण, जवान होके बदले लवांगे। सुन ओए बिल्लिया! तेरी मत्त माड़ी देखी है। तुहाडी अदालक नहीं है। बेअदालती होन लग्गी है। मैनूं मारके कोई बन्द तां नहीं होए जाने हैं। जिन्हाँ ने तुहानूँ मारना है,

सो रामदासपुरे (भैणी साहब का दूसरा नाम) बैठ्या है। पीछे तुहाडा नास करसी।... असीं भी किधरे नहीं जाणा है, माँओं जणेंगी। नवें चोले पायके जुआन होय के फेर श्री साहेब (तलवार) फड़ांगे.... तुसां दे कहर नूं मिटावांगे, तुसीं दे साथ लड़ाई करांगे।'

निर्दोष सूबा ज्ञानी सिंह उर्फ रतन सिंह एवं उसके नायब सूबा रतन सिंह की फांसियों के पश्चात नामधारी मस्तानों में प्रतिशोध की ज्वाला भड़कने लगी। हीरा सिंह, लहन सिंह, गाँव सकरौदी (संगरूर) पटियाला राजा के कर्मचारी थे एवं दो साल पहले सूबा काहन सिंह चक्क वाला के प्रचार से प्रभावित होकर, राजा की नौकरी छोड़कर कूका बनकर, सतगुरु राम सिंह जी के पास ही आकर भैणी साहब में रहने लगे थे। धीरे–धीरे इनके दल की संख्या बढ़ने लगी। सकरौदी गाँव के ही 13 अन्य कूकों ने अपनी कृषि–भूमि आदि बेचकर और कृषि के औज़ार हल–पंजाली इत्यादि जलाकर हीरा सिंह, लहणा सिंह नामक दोनों चचेरे भाइयों ने इनके साथ ही डेरे लगा लिये थे। जब सतगुरु जी भैणी साहब से बाहर दौरे पर जाते तो यह दल भी उनके साथ जाता। भूमि बेचने और कृषि औज़ार जलाने से यह बात स्पष्ट हो गयी कि वे लोग अब सरकार के साथ सीधी टक्कर लेंगे।

1871 ईस्वी के अक्तूबर–नवम्बर माह में सतगुरू राम सिंह की धर्मपत्नी माता जस्सां का निधन हो गया जो धरोड़ (लुधियाना) के साहब सिंह तरखान की पुत्री थी। माई जस्सां और अमृतसर, रायकोट, लुधियाना में शहीद हुए नामधारी सिंहों के निमित्त श्री गुरू ग्रन्थ साहेब के पाठ के भोग की रस्म आने वाली माघी को भैणी साहब में होनी थी। उपरोक्त घटनाओं के बाद सरकार ने फिर गुरु राम सिंह के प्रचार दौरों पर और सिक्ख तीर्थ स्थानों पर जाने पर रोक लगा दी थी।

फिरंगी सरकार एवं उनके दलाल रियासती राजा–नवाबों

के विरूद्ध नारे लगाते चल पड़े। पहला पड़ाव पंजाब के पहले महान स्वतन्त्रता सेनानी भाई महाराज सिंह और भाई बीर सिंह के डेरे पर हुआ। इन्होंने दीवान मूलराज मुल्तान की अंग्रेजों के सामने हुई हार के बाद भी युद्ध का परचम उठाये रखा। कई वर्ष पंजाब में भूमिगत रहे। पकड़े जाने पर सिंगापुर भेजे गये जहाँ अन्धे होने के बाद 1856 ईस्वी में कैद में ही चल बसे थे के पैतृक गाँव रब्बों में किया। दूसरे दिन शाम को मलौद के सरदार बदन सिंह के किले पर धावा बोलकर कुछ हथियार–घोड़े प्राप्त किये और 15 जनवरी, 1872 को सूर्योदय से पहले मलेर कोटला पर हमला हुआ। मलौद एवं मलेरकोटला की झड़पों में दोनों तरफ का जानी नुकसान हुआ। मलौद का सरदार बदन सिंह महाराजा पटियाला का रिश्तेदार था। महाराजा पटियाला द्वारा रायकोट के साके में भाग लेने वाले नामधारियों की गिरफ्तारी एवं उन्हें सज़ा दिलवाने में अंग्रेज़ी सरकार से मेल–जोल के कारण गुस्सा था जो उन्होंने मलौद पर हमला कर साबित कर दिया था। सात नामधारी मलेरकोटला की लड़ाई में और दो मलौद मारे गये थे जबकि दो लोग मलौद सरकार के एवं आठ रियासती सिपाही नामधारियों के हाथों मारे गये। इन नामधारी सिंहो के पास न तो पर्याप्त हथियार थे, न घोड़े और न ही रियासती सेना की तरह प्रशिक्षित सिपाही थे। वे तो मात्र धर्म–युद्ध की लालसा में शीघ्र–अति शीघ्र शहीदी प्राप्त कर अंगेज़ सरकार के विरूद्ध जन–असन्तोष की ज्वाला को प्रचण्ड करना चाहते थे। रियासत मलेर कोटला की गद्दी सम्बन्धी झगड़ा चलता था। नया नवाब नाबालिग था। शासन व्यवस्था का काम एक कौंसिल चलाती थी जिसका मुखिया लुधियाना का उपायुक्त एल. कावन था। मलेरकोटला में यह वारदात करने के बाद नामधारी मस्ताने रड़ गाँव के एक टीले पर इकट्ठे हुए। हीरा सिंह जत्थेदार ने शहीदी पाने की बात कही और यहाँ से जो जाना चाहे उन्हें लौट जाने

की आज्ञा भी दे दी। रियासत पटियाला की पुलिस के सामने 68 नामधारियों ने, जिनमें दो महिलाएँ इन्द कौर एवं खेम कौर थीं, आत्मसमर्पण कर अपने जुर्म का इकबाल किया। डिप्टी कमिश्नर एल.कावन के हुक्म से 66 नामधारी सिंहो को मलेरकोटला में नाभा, पटियाला जींद रियासतों द्वारा भेजी गयी तोपों से उड़ा दिया गया। यह सब काम बिना मुकदमा तुर्त–फुर्त हुआ जिस कारण देशी अखबारों एवं ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में इस घटना की कड़ी प्रतिक्रिया होने पर डिप्टी कमिश्नर एल. कावन को नौकरी से बर्खास्त कर दिया और अम्बाला के कमिश्नर फोरसाईथ से न्यायिक अधिकार छीनकर उसे अवध भेज दिया गया।

हीरा सिंह और लहणा सिंह के नेतृत्व में नामधारियों ने जिस ढंग से स्वयं को तोपों के आगे पेश किया, उससे उनका अदम्य साहस एवं मृत्यु के भय से उनका थोड़ा भी विचलित न होना साबित होता है। इतिहासकार डॉ. फौजा सिंह बाजवा के शब्दों में –'उन्हें यह मालूम था कि सरकार को उनके इरादों की मुकम्मल जानकारी थी। उन्होने शूरबीरों की तरह ही आत्मसमर्पण किया और सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि ने नायकों की तरह ही अपने प्राणों का उत्सर्ग कर गये।'

इस प्रकरण में सबसे दुखद मृत्यु 12 वर्ष के युवा बिशन सिंह की थी जिसे डिप्टी कमिश्नर एल.कावन ने माफी माँगकर जान बचाने को कहा। उसने लपककर एल.कावन की दाढ़ी पकड़ ली और इस अपराध में उसे तलवार से काट डाला गया। महिराज गाँव का वरियाम सिंह महाराजा पटियाला के सिद्धू जाटों के भाईचारों से सम्बन्धित था। उसे कहा गया कि वह छोटे कद का है। तोप का निशाना उन पर ठीक नहीं बैठ रहा, अतः जा सकता है। वह पास के खेतों से कच्ची मिट्टी की ईंटे उठा लाया और उन पर खड़ा होकर कहने लगा– 'तोप चलाओ, अब निशाना

ठीक लगेगा।' इस तरह वह स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में एक नायक के रूप में अंकित हो गया। ज्ञानी ज्ञान सिंह सैंकड़ों अन्य प्रत्क्षदर्शियों की तरह उस समय यह हृदय विदारक दृश्य देख रहे थे, इसलिए 'पन्थ प्रकाश' में वे कलमबन्द कर गये हैं–

**उन हित हुक्म अंग्रेजी आयो। इनको तोपन संग उड़ायो।**
**जब इह हुक्म उन्हें सुन पायो। खुशी भये अति हीय हुल्सयो।**
**मुख पर लाली चढ़ी बधेरे। गावत गुर के भाब्द उचेरे।**
**दीवे पर ज्यों आये पतंगे। त्यों तोपन दिस जाये निसंगे।**
**उड़े खुशी हवै हवै कर सारे। जरा ना कीने परान प्यारे।**
**इह हमने खुद नैन निहारे।**

शहीदे आज़म भगत सिंह महारथी दिल्ली के फरवरी–मार्च 1928 के अंक में सतगुरु राम सिंह एवं उनके जांबाज़ों को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए लिखता है कि 'बेशक वे अपने मिशन में फौरी तौर पर सफल नहीं हुए, फिर भी उन्हें याद क़रना हमारा दायित्व बनता है क्योंकि वे हमारे कौमी शहीद (राष्ट्रीय नायक) हैं।'

अंग्रेज सरकार रायकोट मकद्दमें में भी गुरु राम सिंह से पूछताछ कर चुकी थी। अब मलेर कोटला की घटनाओं का बहाना बनाकर उन्होंने 17–18 जनवरी की आधी रात को सतगुरु राम सिंह जी को लुधियाना बुला भेजा। लुधियाना रेलवे स्टेशन पर कमिश्नर फोरसाइथ ने दो घण्टे लम्बी बातचीत इनसे अकेले में की। अब सरकार समझ रही थी कि जब तक सतगुरु जी एवं उनके मुखिया सूबे पंजाब में रहेंगे, देश सुरक्षित नहीं रहेगा। एक स्पेशल गाड़ी में सूबा साहेब सिंह, सूबा जवाहर सिंह, सूबा लक्खा सिंह एवं सेवक नानूसिंह के साथ इन्हें इलाहाबाद किले में भेज दिया गया। इस दौरान पंजाब के सभी साधु–सन्तों, राजे, जागीरदारों एवं सिक्ख तख्तों के पुजारियों के पास सरकार ने

एक पत्र भेजकर पूछा कि कूका सतगुरु को कैद में रखें या पंजाब वापिस भेज दें। ब्रह्म बूटा अमृतसर के उदासी सन्त, सेखवाँ (फिरोजपुर) के निर्मले सन्त एवं ध्यानपुर (गुरदासपुर) के बैरागी सन्त आदि मात्र तीन महानुभावों ने लिखा कि ये तो साधु व्यक्ति हैं और लोगों को सुमार्ग पर चलने को कहते हैं, अतः इन्हें छोड़ दिया जाये। शेष सैंकड़ों लोगों ने, विशेषतः सिक्ख राजाओं ने लिखा कि यदि वह वापिस लौट आया तो न आपको (ब्रिटिश सरकार) छोड़ेगा और न हमें (देशी रियासतों के मुखियों को)। अतः सन् 1818 के बंगाल रेग्युलेशन की धारा तीन के तहत इनके तथा अन्य सूबाओं के वारंट जारी हुए। सतगुरु जी को मार्च 1872 में रगून भेज दिया। वहाँ उनका उसी बँगलें में डेरा था जहाँ अन्तिम मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फर अपनी मृत्यु तक रहा था। नामधारी सिक्खों के साथ सतगुरु जी से भेंट करके एवं पत्र जिन्हें हुक्मनामे कहा जाता है, लेकर आये। इनके बँगले पर दिन में काले तथा रात को गोरे बन्दूकधारियों का पहरा रहता था। यह लिखित आदेश था कि गुरु के साथ बातचीत एवं पत्र–व्यवहार करने वाले को पकड़ा भी जा सकता है और गोली भी मारी जा सकती है। 1880 ई. की अन्तिम तिमाही में इन्हें मरगोई टापू में भेज दिया गया। वहाँ भी पंजाब के शूरवीर नामधारी मीहां सिंह सिरहाली (अमृतसर) एवं नारायण सिंह रोडे (मोगा) इनके पास रूस सरकार के नामधारी नेता के नाम पत्र लेकर पहुँच गये। गुरुदास सिंह एवं उनके भाई गुरु हरी सिंह (पहला नाम बुध सिंह) के पत्र भी रूस के संग्रहालयों में सुरक्षित रखे हैं जिनमें रूस से सैनिक सहायता की माँग की गयी थी। सरकारी रिकॉर्ड के मुताबिक 29 नवम्बर, 1885 ईस्वी को मरगोई जेल के अस्पताल में शाम 4 बजकर बीस मिनट पर सतगुरु जी का निधन हो गया। कुछ सरकारी दस्तावेजों में 1886 ईस्वी में सरकार गुरु जी को अन्यत्र भेजने की बात कह रही है। उनकी भजन–पाठ

की पोथियाँ भी सरकार लौटा नहीं पायी। अतः नामधारी सिक्खों का दृढ़ निश्चय है कि इनका निधन वहाँ नहीं हुआ। लम्बे समय से नामधारी यह विश्वास सँजोए हुए हैं कि गुरूजी वापिस पंजाब में आयेंगे और उनके आने पर ही राम–राज्य यानी समतामूलक समाज की स्थापना होगी।

अम्बाला के कमिश्नर मैकनेब ने अप्रैल 1872 ईस्वी में इलाहाबाद में सूबों के बयान कलमबद्ध किये और उनके बारे में 1 वर्ष से लेकर दस वर्ष तक व जीवन पर्यन्त कैद में रखने की सज़ाएँ तवनीज़ की गयीं। सूबा जवाहर सिंह, सूबा ब्रह्मा सिंह एवं लक्खा सिंह को मौलमीन (माँडले) भेज दिया। सूबा काहन सिंह, सूबा साहेब सिंह को अदन भेजा गया। सरदार मंगल सिंह को भी वहीं भेजना था पर महाराजा पटियाला से उनकी रिश्तेदारी काम आयी। दूसरा वह सामन्ती मूल का व्यक्ति होने के कारण उस मिट्टी का नहीं बना था जिसके बाकी सूबे बने थे। उसने क्षमा–याचना की और 15 महीने के बाद वापिस आ गया। कुछ साल बाद अदन से दोनों सूबों को हज़ारीबाग (बिहार) की जेल में भेजा गया। सूबा पहाड़ा सिंह, सूबा अरूण सिंह एवं मलूक सिंह को बाम्बे प्रेसीडेन्सी की एक गढ़ी असीरगढ़ में कैद रखा गया। काहन सिंह और हुकम सिंह चुनार (उत्तर प्रदेश) के किले में कैद रहे। साहिब सिंह, पहाड़ा सिंह, अरूण सिंह, जवाहर सिंह एवं लक्खा सिंह तो कैद में चल बसे शेष पाँच सूबों को कम से कम 15 वर्ष कैद काटने के बाद वर्ष 1887–88 में महारानी विक्टोरिया की जयन्ती के अवसर पर वापिस पंजाब भेज दिया पर वे न तो नामधारियों के दीवानों में और न ही भैणी साहिब जाने को स्वतन्त्र थे।

सतगुरु राम सिंह के आदेश मुताबिक उनके देश–निर्वासन उपरान्त उनके छोटे भाई बुध सिंह ने गुरू हरी सिंह के रूप में

नामधारियों की अगुवायी की। इनका अधिकांश समय मुसीबतों से भरा हुआ था। गुरूद्वारा भैणी साहिब के मुख्य द्वार पर जनवरी 1872 से पुलिस चौकी बिठा दी गई। 24 घंटो में मात्र 5 नामधारी नाम–पते लिखवाकर गुरुद्वारे के भीतर जा सकते थे। दूसरे दिन उनके लौट आने पर नए नामधारी सिक्ख भीतर भेज दिये जाते। पंजाब भर में 5 या इससे ज्यादा नामधारियों का इकट्ठा होना गैर–कानूनी अपराध माना जाता था। शादी–ब्याह आदि पर पूर्व मंजूरी से ही वे इकट्ठे हो सकते थे। ''गुरु ग्रन्थ साहिब'' का पाठ करने पर भी उन्हें पकड़ लिया जाता था। क्योंकि सरकार समझती थी कि ये लोग पाठ के बहाने इकट्ठे होकर सरकार विरोधी प्रचार करते हैं और राज्य के लिए खतरा बन रहे हैं।

अनेक नामधारी सिक्ख उपरोक्त कारणों से जेलों में डाल दिये गये। उनके मकान गिरा दिये गये और ज़ायदाद ज़ब्त कर दी गई। यहाँ तक कि उनके दैनिक उपयोग के वस्त्र, अनाज, दूध इत्यादि भी ज़ब्त कर लिये जाते थे। गुरु हरी सिंह ने सत्गुरु राम सिंह द्वारा जारी 'सदाबरत–लंगर' बन्द नहीं होने दिया। वे कहते थे कि 'ईंधन की जगह अगर मुझे अपने हाड़ भी जलाने पड़ें तो मैं इसे जारी रखूँगा।' 1899 ई. मुताबिक 1956 विक्रमी संवत् के काल के समय बागड़ (राजस्थान) के हज़ारों अकाल पीड़ितों को भोजन तथा पशुचारा महीनों तक भैणी साहेब के लंगर से मिला। जब सरकार ने उन्हें नयी आबाद बारों (जंगल क्षेत्र) में से सौ मुरब्बा (2500 एकड़) भूमि लंगर हेतु देने की बात की तो गुरु जी ने उत्तर दिया कि 'मात्र सौ मुरब्बे ही क्यों? सारा देश हमारा है। मात्र 100 मुरब्बे लेकर बाकी देश पर आपका अधिकार मान लें। यह सम्भव नहीं।' अंग्रेज सरकार का प्रस्ताव ठुकरा दिया। 1906 ई. में उनके निधन पर उनके बड़े सुपुत्र सतगुरू प्रताप सिंह नामधारियों के गुरु बने।

सतगुरु प्रताप सिंह ने पूरे पंजाब तथा भारत के अन्य प्रान्तों सहित, थाईलैंड, अफ्रीका आदि देशों में घूम–घूमकर नामधारी पन्थ का बहुत प्रचार किया और इसके पुराने गौरव को बहाल किया। उन्होंने 1920 ई. में कलम की ताकत को समझते हुए नामधारियों के लिए पंजाबी साप्ताहिक पत्र 'सतजुग' पहले लाहौर और फिर भैणी साहिब से प्रकाशित करवाया। आजकल यह समाचार–पत्र दिल्ली से हिन्दी, अंग्रेजी एवं पंजाबी भाषाओं में छपता है। सतगुरु प्रताप सिंह ने गुरु नानक मत को मानने वाले सभी सम्प्रदायों को सन् 1934 में एक मंच पर इकट्ठा किया। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम तथा हिन्दू–सिक्ख एकता के लिए अनेक बार सम्मेलन किये और पंजाबी भाषा के विकास के लिए भी योगदान दिया। देश की स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले क्रान्तिकारियों से लेकर, कांग्रेस के बड़े नेताओं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस से उनके मधुर सम्बन्ध थे। सन्त मंगल सिंह, निधान सिंह आलम, इन्द्र सिंह चक्रवर्ती, पण्डित मंशा सिंह कौमी, महाराज निहाल सिंह, महाराज गुरदयाल सिंह इत्यादि नामधारी बुद्धिजीवियों का कांग्रेस को पंजाब में सन् 1947 तक बहुत योगदान मिला। जीवननगर आबाद करने के बाद इन्होंने बीड़ मरारडू नाभा रियासत में सैंकड़ों भूमिहीन नामधारी परिवारों को हज़ारों एकड़ भूमि एवं दुधारू पशु, बैल, बीज आदि अपने पास से देकर देश बँटवारे के बाद अपने पाँवों पर खड़ा किया। उनकी शिक्षाओं (प्रवचनों) के पाँच खण्ड 'लाल ऐहि रतन' नाम से प्रकाशित हो चुके हैं।

21 अगस्त, 1959 को सतगुरू प्रताप सिंह के निधन के बाद उनके बड़े सुपुत्र सतगुरू जगजीत सिंह नामधारी गुरू बने। इन्होंने नामधारियों को एक अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दी। आज नामधारी सिक्ख दुनियां के प्रत्येक महाद्वीप में आबाद हैं। उन्होंने

अपने पूर्वजों की तर्ज़ पर नामधारी सिक्खों के बीच जाना जारी रखा और एक–एक वर्ष में लाखों किलोमीटर सड़क, रेल एवं हवाई मार्ग से सफर किया। उन्होंने जीवन नगर क्षेत्र में स्कूल, कॉलेज, खेल स्टेडियम, पुस्तकालय, सड़कें बनवाईं और अपने सिक्खों को अच्छे कृषक, पशुपालक, बागवान और व्यवसायी बनने पर बल दिया। नामधारियों के कॉमन पूल में से निकाली भूमि से हरियाणा के इस पिछड़े क्षेत्र में कई स्कूल तथा कॉलेज खुलवाये। आज नामधारी हॉकी इलेवन की देश में अपनी पहचान है। जीवननगर क्षेत्र के गाँव सन्तनगर ने सरदारा सिंह, दीदार सिंह, हरपाल सिंह जैसे ओलम्पियन भारतीय हॉकी को दिये हैं। इस सय जीवन नगर हॉकी के खिलाड़ियों के लिए दूसरा संसारपुर (प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी ध्यानचन्द्र का गाँव) बन चुका है।

गोधन की सेवा करने एवं भारत में सर्वाधिक दूध देने वाली गायें 'जीवन नगर पशु फार्म' में तैयार करने पर सत्गुरु जगजीत सिंह जी को 'गोपाल रत्न' जैसे सर्वोच्च पुरस्कार से अलंकृत किया गया। इन्होंने गुरमत संगीत की पुरातन रीतों, बन्दिशों को सँभालकर गुरु काल से चले आये कीमती संगीत खजाने को सहेज रखा था। अपने अनुज महाराज बीर सिंह सहित शास्त्रीय संगीत के अच्छे ज्ञाता थे।

**नोट– युग पुरुष सत्गुरु जगजीत सिंह जी 13 दिसम्बर 2012 को ब्रह्मलीन हो गये। उसके उपरान्त सत्गुरु उदय सिंह जी ने नामधारी सिक्ख पंथ का दायित्व सभांला एवं आध्यात्मिक गुरू परंपरा अनुरूप ''गुरु गद्दी'' पर सुशोभित हुए।**

''गुरू जी ने जैसे ही अमृतसर दीवाली के अवसर पर शानो–शौकत के साथ पहुंचने का मन बनाया, उनके अनुयायी बहुत बड़ी गिनती में एकत्रित हो गये। वह उनके दृढ़ विश्वासी एवं आज्ञाकारी थे। वह उस (गुरू) के लिए अपनी जानें कुर्बान करने के लिए तैयार थे।''

**–कैप्टन मैंजीज़, एस.एस.पी.,**
अमृतसर

''(गुरू) राम सिंह को केवल संत–स्वभाव फ़कीर कहलवाने का कोई बहाना नहीं। (अपितु) वह आधी दर्जन घुड़सवारों एवं बीसीयों पैदल अनुयायियों के साथ आता है। वह तुम्हारे कमरे में राजकुमार की तरह दरबारियों द्वारा घिरा हुआ प्रवेश करता है। वह और उसके साथियों ने सुन्दर श्वेत वस्त्र धारण किए होते हैं।

–जे.डब्ल्यू मैकनाब (4.11.1871)

मैं खुद भैणी गया और देखा, कूकेओं ने जो तरीका अख्त्यार किया है, वह और कुछ नहीं, वह दरअसल धार्मिक सिक्खों का ही है, और उसे उन्होंने दुबारा रौनक दी है। नानक शाह की तरह राम सिंह भी हर कौम और हर जाति के लोगों को अपने मजहब व फिरके में मिला लेता है। मुसलमानों को भी कूका बना लेता है। किसी जाति की सीमा नहीं है। गुरू गोबिन्द सिंह को अपना देवता मानते हैं। कूकेओं को रोज रात को तीन बजे उठकर नहाना होता है, और नहा–धोकर ग्रंथ के श्लोक पढ़ते हैं। उनको तमाम उम्र नेकी और नेकचलनी की ताकीद की जाती है। इन लोगों के बड़े गिरोह को देखकर यह मालूम होता है कि इस जदीद फिरके की बड़ी जल्द तरक्की हुई है। गाँव के गाँव और मौजियों के मौजिया कूके हो गये।

**–मौलवी गुलाम भीख जलंधरी,**
''तारीख वाकरी''

सब अपने हैं, हम सबके हैं, कितना बड़ा अहसान है सिक्ख गुरूओं का, इस देश के ऊपर और दुनियां के ऊपर। मैं तो अपने आपको, केशाधारी न सही, सहजधारी सही, गुरू नानक के चेलों में मानता हूँ और सब सिक्ख गुरूओं को मानता हूँ। मैं तो अपने आपको सिक्ख मानता हूँ, सहजधारी। गुरू राम सिंह मेरे दादा गुरू हैं, क्योंकि महात्मा गांधी मेरे गुरू हैं और महात्मा गांधी के गुरू, सतगुरू राम सिंह हैं। महात्मा गांधी ने नान–वाइलैंस का आइडिया गुरू राम सिंह जी से लिया था।

**–पं. सुंदर लाल सेनानी,**

प्रख्यात स्वतंत्रता सेना एवं इतिहासकार

अपनी पसलियों को जला कर कूकों ने उस शमां को रोशन किया जिससे शांति, स्वतंत्रता, लोकतंत्र तथा एकता को अलौकिक प्रकाश प्राप्त हुआ।''

**–महान कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर**

गुरू राम सिंह जी स्वतंत्रता को भी धर्म का अंग समझते थे। हमारे देश में महात्मा गांधी ने जो असहयोग इतने जोर से चलाया है उसका गुरू राम सिंह जी ने प्रायः पच्चास वर्ष पूर्व ही नामधारियों में प्रचार किया था। उनके सिद्वातों में पांच चीजें प्रमुख थीं–

(1) सरकारी नौकरी का वहिष्कार
(2) सरकारी अदालतों का वहिष्कार
(3) सरकारी स्कूलों का वहिष्कार
(4) विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार
(5) ऐसे कानून मानने से इन्कार जो आत्मा के विरूद्ध हैं।

**– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति)**

के सन् 1935 में लिखे लेख से साभार

## समाज सुधार क्रान्ति

श्री कपूर सिंह आई.सी.एस. अपनी पुस्तक ''सप्त श्रंग'' में लिखते हैं– ''बाबा रामसिंह एक बहुत महान सुधारक तथा मार्गदर्शक हुए हैं, जिन्होंने समाज में पुरूष तथा स्त्री की सम्पूर्ण एकता का प्रचार किया तथा उस में सफल भी हुए। अगर उनके द्वारा देश तथा जाति के लिए किये गए अन्य महान कार्यों को छोड़ भी दिया जाए, तो उनका केवल यही प्रचार – कि ''स्त्री तथा पुरूष समाज में बराबर के हकदार है''– उनको संसार भर के मुख्य सुधारकों की पंक्ति में खड़ा कर देता है।''

(**डा. राजेन्द्र प्रसाद**– सर्वप्रथम राष्ट्रपति, भारत)

''हम तुम्हारा राज नहीं चाहते, हम अपने भाईयों का राज चाहते हैं ........... हम फिर जन्म लेंगे, अपने हाथों में तलवार लेकर युद्ध करेंगे तथा तुम्हारा राज समाप्त करेंगे।''

''यह सत्य है कि कूकों के लिए अंग्रेज सरकार के प्रति निष्ठावान होने का प्रश्न ही नहीं उठता।'' (लुधियाना– डिस्ट्रिक गज़ेटियर–1904)

पण्डित जवाहर लाल नेहरू जी ने 'सतयुग' पत्रिका में लिखाः ''सत्गुरू राम सिंह जी ने असहयोग आन्दोलन तथा देश के प्रति कुर्बानी देने की लहर चला कर देश भक्तों का जो मार्गदर्शन किया है, यदि समस्त देश यह समझ ले तो निकट भविष्य में ही अपनी गणना स्वतन्त्र देशों के अन्तर्गत करवा सकता है।..... सत्तर वर्ष पूर्व देश की स्वतन्त्रता के लिए अहिंसा का आंदोलन जितना प्रभावशाली था, वह आज भी उतना ही नवीन तथा बलशाली है।''

**नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था:–**

''गुरू राम सिंह जी के फहराए हुए आज़ादी के झण्डे तले नामधारी कूकों ने जो कुर्बानियाँ की हैं, उन पर देश सदा गौरव करेगा। अब फिर भारतीयों के देश–प्रेम की परीक्षा होने वाली है और सदियों में अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन का अनुभव रखने वाले नामधारी वीर कूकों से यही आशा है कि वह स्वतन्त्रता का झण्डा उठा कर आगे–आगे बढ़ते दिखाई देते रहेंगे और दूसरे देशवासियों को भी बलिदान के लिए उत्साहित करते रहेंगे।''

– पण्डित नेहरू जी ने सत्गुरू प्रताप सिंह जी से निवेदन किया: ''महाराज जी! आपकी क्या मांग है ?'' श्री सतगुरू जी ने उत्तर दिया–'' हम अंग्रेजों से क्यों कुछ मांगें, मेरी तो एक ही इच्छा है कि हम स्वतन्त्र हों, स्वतन्त्र देश में गो–हत्या पूर्ण रूप से बंद हो तथा गरीबों का जीवन स्तर ऊँचा उठ सके।''